डाक पंजीयन नं. 99/2021-23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG-5

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

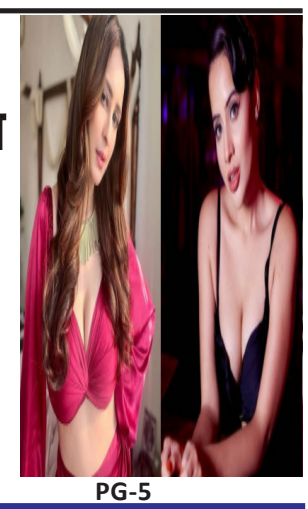

PG-5

सिनेमाःशादी और मां बनने की बात पर उर्फी जावेद ने चाहत खन्ना को दिया करारा जवाब

वर्ष -08 अंक -172 | प्रयागराज, बुधवार 21 सितम्बर, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

राहुल गांधी नहीं माने तो कौन बनेगा कांग्रेस अध्यक्ष इन दो नेताओं के नाम अब सबसे आगे

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । कांग्रेस में राहुल गांधी को अध्यक्ष बनाने की मांग तेज होती जा रही है। पार्टी की आधा दर्जन

से अधिक प्रदेश इकाइयों ने प्रस्ताव पारित कर उन्हें अध्यक्ष बनाए जाने की मांग की है। लेकिन जानकारों की मानें तो अगर राहुल चुनाव लड़ने के लिए नहीं मानते हैं तो दो नाम सबसे ऊपर हैं जो कांग्रेस अध्यक्ष की रेस में सबसे आगे हैं। अशोक गहलोत और थरूर सबसे बड़े दावेदार अशोक गहलोत जो गांधी परिवार के करीबी माने जाते हैं वे इस रेस में सबसे आगे हैं। इस बीच शशि थरूर जिन्हें कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी ने आज ही चुनाव लड़ने की मंजूरी दी है, वे भी अध्ययक्ष बनने के दावेदार के रूप में उभरे हैं। हालांकि राजस्थान के मुख्यमंत्री के करीबी सूत्रों ने कहा कि वह अपने स्वयं के नामांकन के बजाय राहुल गांधी को मनाने की कोशिश कर रहे हैं।गहलोत के सोनिया गांधी से उनके आवास पर मिलने के बाद अटकलों को फिर से बल मिला है। सूत्रों के अनुसार, कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष ने उन्हें पार्टी प्रमुख का फैसला करने के लिए चुनाव के लिए तैयार रहने के लिए कहा था। कई लोगों का मानना है कि गहलोत को इस पद के लिए शीर्ष नेतृत्व का समर्थन प्राप्त है।

पीएम मोदी करेंगे बीजेपी मेयर सम्मेलन का उद्घाटन

गुजरात के गांधीनगर में हो रहा ये कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मंगलवार को गुजरात की राजधानी गांधीनगर में होने वाले दो दिवसीय 'राष्ट्रीय महापौर सम्मेलन' का वर्चुअल रूप से उद्घाटन करेंगे। इस सम्मेलन में देशभर से भाजपा शासित शहरी स्थानीय निकायों के महापौर और उपमहापौर शामिल होंगे। पीएम मोदी भाजपा के मेयरों के इस कार्यक्रम को संबोधित करेंगे। यह कार्यक्रम सुबह साढ़े 10 बजे से शुरू होगा। भाजपा के राष्ट्रीय सचिव ऋतुराज सिन्हा ने कहा कि देशभर के 121 महापौर और उपमहापौर इस दो दिवसीय कार्यक्रम में भाग लेंगे। यह महापौर सम्मेलन पार्टी के सुशासन प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित किया जा रहा है। सिन्हा ने कहा कि पीएम मोदी वर्चुअली रूप से मंगलवार सुबह राष्ट्रीय महापौर सम्मेलन का उद्घाटन और संबोधन करेंगे। इस दौरान पीएम मोदी शहरी विकास के मुद्दे पर महापौर और

उपमहापौर का मार्गदर्शन करेंगे। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा भी उद्घाटन समारोह में शामिल होंगे। दो दिन तक चलने वाले इस सम्मेलन में भाग लेने वाले अन्य लोगों में महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्री हरदीप सिंह पुरी भी शामिल हैं। भाजपा के राष्ट्रीय सचिव सिन्हा ने बताया कि फडणवीस शहरी विकास के लिए अपने दृष्टिकोण को साझा करेंगे और पुरी देशभर के मेयरों को शहरी स्थानीय निकायों के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी देंगे। कुल मिलाकर 18 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के महापौर, उप महापौर और अन्य निर्वाचित प्रतिनिधि इस सम्मेलन में भाग लेंगे और अपने विचार साझा करेंगे। इस दौरान अपशिष्ट प्रबंधन, यातायात प्रबंधन, जल-भराव एवं शहरों में होने वाली समस्यायों पर चर्चा की जाएगी। सिन्हा ने कहा कि सूरत, इंदौर, कानपुर और पणजी के मेयर कचरा प्रबंधन, साफ-सफाई और राजस्व बढ़ाने के लिए अपने द्वारा किए गए कार्यों के बारे में दर्शकों को जानकारी देंगे।

राष्ट्रपति मुर्मु ने आठ आइआइटी के निर्देशकों की नियुक्ति को दी मंजूरी

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेकनलाजी के आठ नए निदेशकों की नियुक्ति को मंजूरी प्रदान की है। सेशाद्री शेखर को आइआइटी पलक्कड़ और श्रीपद कलमालकर को आइआइटी भुवनेश्वर का निदेशक नियुक्त किया गया है। शिक्षा मंत्रालय के अनुसार, आइआइटी खड़गपुर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के वेंकेयाप्पाया आर देसाई को धारवाड़ आइआइटी का निदेशक बनाया गया है। यहां के वर्तमान निदेशक पाशुमार्थेय शेशु को अब आइआइटी गोवा का निदेशक बनाया गया है। इसके अलावा केएन सत्यनारायण को आइआइटी तिरुपति , राजीव प्रकाश को आइआइटी भिलाई , रजत मूना को आइआइटी गांधीनगर और मनोज

सिंह गौड़ को आइआइटी जम्मू का निदेशक बनाया गया है। राष्ट्रपति मुर्मू ने सोमवार को पलक्कड़, तिरुपति, धारवाड़, भिलाई, गांधीनगर, भुवनेश्वर, गोवा और जम्मू सहित 8 आइआइटी के लिए निदेशकों की नियुक्ति को मंजूरी दी है। प्रोफेसर ए शेषाद्री शेखर जो अभी वर्तमान में मद्रास के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग से जुड़े हुए हैं, इन्हें पलक्कड़ के निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है। जबकि मद्रास के प्रोफेसर केएन सत्यनारायण को घ्छ तिरुपति में नियुक्त किया गया है।वहीं सोमवार को केंद्रीय शिक्षा और कौशल विकास मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने घ्छ मद्रास की रणनीतिक योजना 2021-27 जारी की है। धर्मेंद्र प्रधान ने एमएसएमई को ऊर्जा खपत कम करने में मदद करने के लिए कोटक से सीएसआर फंडिंग सहायता के साथ स्थापित किया जा रहा 'कोटक आईआईटीएम सेव एनर्जी' मिशन भी लॉन्च किया और क्वांटम सूचना, संचार और कंप्यूटिंग केंद्र के विकास का समर्थन करने के लिए एम्फैसिस टीम को सम्मानित किया।

वैज्ञानिक सोच बनाने और मानवता के भविष्य को आकार देने वाले मंदिर है

(आधुनिक समाचार सेवा)

मद्रास (तमिलनाडु)। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने सोमवार को मद्रास की रणनीतिक योजना 2021-27 जारी की। इस दौरान केंद्रीय मंत्री ने 'कोटक आईआईटीएम सेव एनर्जी' मिशन भी लॉन्च किया।

उन्होंने डाटा साइंस में बीएससी प्रोग्राम के चुनिंदा छात्रों को डिप्लोमा सर्टिफिकेट भी प्रदान किया। इस अवसर पर बोलते हुए धर्मेंद्र प्रधान ने अकादमिक उत्कृष्टता और राष्ट्र निर्माण की दिशा में इन पहलों के उद्घाटन और शुभारंभ पर सभी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि आईआईटी सिर्फ शैक्षणिक संस्थान नहीं हैं, वे वैज्ञानिक सोच बनाने और मानवता के भविष्य को आकार देने के लिए मंदिर हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमारे समाज को आईआईटी से बहुत उम्मीदें हैं। हमारे आईआईटीयनों को विकास के पथ प्रदर्शक होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वह दिन दूर नहीं जब पूरी दुनिया ब्रेन रिसर्च सेंटर से लाभ लेने के लिए आईआईटी मद्रास आएगी। 3डी-प्रिंटिंग तकनीक जैसे विचार निर्माण में क्रांति ला सकते हैं, विस्थापन के मुद्दों के हल करने में मदद कर सकते हैं और गरीबों को सम्मान का जीवन दे सकते हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत में समाज को वापस देने की संस्कृति है और भारत समाज की बेहतरी के लिए नवाचार करता है। घ्छ मद्रास की तकनीकी ताकत के कारण, भारत 2023 के अंत तक स्वदेशी 5 को चालू कर देगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि आईआईटी में प्रतिभा से भरे छात्र मुझे बहुत आत्मविश्वास देते हैं।

पीएम मोदी ने महिलाओं का दिल जीतकर आधी आबादी को दिया बड़ा संदेश

(आधुनिक समाचार सेवा)

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कूनो दौरा चीता युग की शुरुआत के अलावा अपने संबोधन के लिए भी उन महिलाओं के लिए यादगार बन गया, जो कराहल में स्व-सहायता समूहों के सम्मेलन में थीं या लाइव सम्मलेन से जुड़ीं।

प्रधानमंत्री मोदी ने नारी सशक्तीकरण, सम्मान और स्वाभिमान पर केंद्रित संबोधन में महिलाओं के कल्याण की योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि आज (17 सितंबर) मुझे अपनी मां के पास होना था, वह मुझे प्यार से आशीर्वाद देतीं, लेकिन वह यह देखकर खुश हो रही होंगी कि मुझे पूरे मध्य प्रदेश की मां, बहन और बेटियां आशीर्वाद दे रही हैं। मोदी का संबोधन सियासी गलियारों में चर्चा में है और कई मायने निकाले जा रहे हैं। दरअसल 2018 के विस चुनाव में ग्वालियर-चंबल क्षेत्र से भाजपा को निराशा हाथ लगी थी, जबकि बीते दिनों हुए निकाय चुनाव में भी खास परिणाम नहीं मिले। यानी, नाराजगी दूर नहीं होने के संकेत साफ दिख रहे हैं। माना जा रहा है कि 2018 में एट्रोसिटी एक्ट को लेकर हुए प्रदर्शन के बाद कि गिरफ्तारी और थानों में मामले दर्ज होने की नाराजगी बनी हुई है। ऐसे में 2023 की राह कठिन हो सकती है।

बेचे गए छात्राओं के अश्लील वीडियो गुजरात और मुंबई तक मामले के जुड़े तार

(आधुनिक समाचार सेवा)

मोहाली। चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी के छात्रावास में कई छात्राओं के नहाते समय बनाए गए अश्लील वीडियो के मामले में गहरी साजिश के संकेत मिल रहे हैं। वरिष्ठ आइपीएस अधिकारी गुरप्रीत कौर दियो की अगुआई में तीन महिला पुलिस अधिकारियों की एसआइटी गठित कर दी गई है। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि हिमाचल के रोहडू से पकड़े गए आरोपित सनी ने छात्रा को प्रेम के जाल में फंसाकर उसका अश्लील वीडियो मांगा और इसके बाद अपने दोस्त रंकज वर्मा और एक अन्य युवक के साथ मिलकर उसे ब्लैकमेल करने लगा। उसके जरिये दूसरी छात्राओं के अश्लील वीडियो बनवाए। पुलिस को आशंका है कि आरोपितों ने इन

वीडियो को आगे बेचा। मामले के तार गुजरात और मुंबई से भी जुड़ रहे हैं। इस मामले में गिरफ्तार आरोपित छात्रा, उसके ब्वायफ्रेंड सनी और रंकज वर्मा को खरड़ अदालत ने सात दिन के पुलिस रिमांड पर भेज दिया है। पुलिस ने अदालत को बताया कि तीनों आरोपितों के मोबाइल फोन पर गुजरात और मुंबई से भी कई काल्स आई हैं, जिसके बारे में तीनों से पूछताछ की जाएगी। पुलिस ने बताया कि इस मामले में एक अन्य शख्स भी शामिल है। उसकी तलाश की जा रही है। शनिवार दोपहर करीब तीन बजे हास्टल की सातवीं मंजिल पर एक छात्रा को बाथरूम में नहा रही दूसरी छात्राओं का अश्लील वीडियो बनाते पकड़ा गया था। इसके बाद हड़कंप मच गया। विद्यार्थियों के प्रदर्शन और आक्रोश को देखते हुए यूनिवर्सिटी को छह दिन के लिए बंद कर दिया गया है।

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने की पीएम की तारीफ

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । सोमवार को देश और दुनिया में कई ऐसा घटनाएं घटी जिसने सुर्खियां बटोरी। आइए आज दिन-भर 10 बड़ी खबरों पर एक नजर डालते हैं। बंगाल की मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी ने सोमवार को विधानसभा में केंद्रीय एजेंसियों के दुरूपयोग के खिलाफ लाये गये निंदा

प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जहां तारीफ की, वहीं भाजपा नेताओं पर जमकर निशाना साधा। बंगाल की मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी ने सोमवार को विधानसभा में केंद्रीय एजेंसियों के दुरूपयोग के खिलाफ लाये गये निंदा प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जहां तारीफ की, वहीं भाजपा नेताओं पर जमकर निशाना साधा।

भारतीय परिवार सबसे अधिक यहां देते हैं दान

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । भारतीय परिवारों ने वर्ष 2021-22 के दौरान 23,700 करोड़ रुपये दान किए। इसमें से सबसे अधिक दान धार्मिक संगठनों को मिला। अशोक विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में यह बात सामने आई है।अशोक विश्वविद्यालय में सामाजिक प्रभाव और परोपकार केंद्र और वर्ल्ड पैनल डिवीजन आफ

कंटार द्वारा हाउ इंडिया गिव्स, 2021-22 शीर्षक से जारी रिपोर्ट के मुताबिक भारतीयों ने ज्यादातर दान नकद में दिया। इस अध्ययन के लिए 18 राज्यों के कुल 81 हजार परिवारों को सर्वेक्षण में शामिल किया गया। अध्ययन रिपोर्ट में कहा गया है कि धार्मिक आस्था प्राथमिक तौर पर भारतीयों को दान करने के लिए प्रेरित करती है। वहीं, वित्तीय संकट से गुजर रहे परिवारों की मदद की इच्छा और पारिवारिक परंपरा दान देने के अन्य प्रेरक कारण हैं। दक्षिण भारत ने सबसे अधिक औसत राशि दान की, उसके बाद पश्चिम भारत का स्थान आता है। पूर्वी और उत्तर भारत में दान देने के मामले सबसे अधिक रहे। धार्मिक संगठनों को सबसे ज्यादा दान अध्ययन में पता चला है कि 64 फीसद परिवारों ने धार्मिक संगठनों को दान दिया और 61 फीसद लोगों ने भिखारियों को दान किया। अध्ययन के मुताबिक अनुमान है कि धार्मिक संगठनों को करीब 16,600 करोड़ रुपये की राशि दान की गई, जो कुल दान का करीब 70 फीसद है। करीब 2,900 करोड़ भिखारियों को दान रिपोर्ट के मुताबिक, कुल दान में से 12 फीसद (करीब 2,900 करोड़ रुपये) भिखारियों को मिले, जबकि नौ फीसद दान परिवार और दोस्तों को किए गए।

वाराणसी और बोगिबील के बीच अगले साल शुरू होगी सबसे लंबी क्रूज सेवा

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । बंदरगाह, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने सोमवार को कहा कि देश की सबसे लंबी नदी क्रूज सेवा उत्तर प्रदेश के वाराणसी और

असम के बोगिबील के बीच अगले साल की शुरुआत में शुरू होगी। यह क्रूज सेवा 4,000 किलोमीटर से भी लंबा सफर तय करेगी और गंगा, भारत-बांग्लादेश प्रोटोकाल मार्ग (आइबीपीआर) एवं ब्रह्मपुत्र नदियों से होकर गुजरेगी। सोनोवाल ने कहा कि इस क्रूज सेवा के शुरू होने से असम के लोग पर्यटन और मालवहन से जुड़ी आजीविका और व्यापार को बढ़ावा देने में नदी जलमार्गों का इस्तेमाल कर पाएंगे। उन्होंने कहा, 'हमारी सरकार अंतर्देशीय नौवहन, नदी क्रूज पर्यटन को बढ़ावा देने और ब्रह्मपुत्र नदी पर समुचित टर्मिनलों के निर्माण की संभावनाओं को भी चिह्नित करने में जुटी हुई है।' सोनोवाल ने सोमवार को असम में डिब्रूगढ़ के नजदीक बोगिबील क्षेत्र के विकास के लिए विभिन्न परियोजनाओं की शुरुआत भी की। इस सिलसिले में उन्होंने बोगिबील और गुइजन जलक्षेत्र में बनने वाले दो तैरते घाटों (फ्लोटिंग जेट्टी) के निर्माण की आधारशिला भी रखी। ये दोनों घाट अत्याधुनिक और अद्यतन प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हुए नवीनतम नदी टर्मिनल के रूप में विकसित की जाएंगे। इन दोनों घाटों का निर्माण 8.25 करोड़ रुपये की लागत से भारतीय अंतदेशीय जलमार्ग प्राधिकरण की तरफ से राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-2 पर किया जाएगा। ब्रह्मपुत्र नदी से गुजरने वाले जलमार्ग को ही राष्ट्रीय जलमार्ग-2 के रूप में जाना जाता है। सोनोवाल ने इसके अलावा बोगिबील रिवरफ्रंट यात्री घाट का उद्घाटन भी किया।

अगले साल दिल्ली में नहीं होगा सेना दिवस परेड का आयोजन

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । देश में हर साल 15 जनवरी को सेना दिवस मनाया जाता है। इस मौके पर दिल्ली के करियप्पा परेड मैदान में विशेष परेड का आयोजन होता है। हालांकि, इस बार सेना दिवस परेड को राष्ट्रीय

राजधानी दिल्ली से बाहर स्थानांतरित करने का निर्णय लिया गया है। सेना दिवस परेड अगले साल दक्षिणी कमान क्षेत्र में आयोजित होगी। इसकी जानकारी भारतीय सेना के अधिकारियों ने समाचार एजेंसी एएनआइ को दी है पीएम मोदी की पहल पर लिया फैसला दरअसल, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से महत्वपूर्ण आयोजनों और उत्सवों को स्थानांतरित करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पहल की थी। जिसे देखते हुए भारतीय सेना ने अगले साल अपनी वार्षिक सेना दिवस परेड को दक्षिणी कमान क्षेत्र में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया है। दक्षिणी कमान क्षेत्र में आयोजित होगी परेड भारतीय सेना के अधिकारियों ने समाचार एजेंसी एएनआइ को बताया कि भारतीय सेना ने हर साल 15 जनवरी को दिल्ली में आयोजित होने वाली वार्षिक सेना दिवस परेड को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के बाहर स्थानांतरित करने का फैसला किया है। 2023 की सेना दिवस परेड दक्षिणी कमान क्षेत्र में आयोजित की जाएगी। भारतीय सेना की दक्षिणी कमान का मुख्यालय महाराष्ट्र के पुणे में है। माना जा रहा है कि 2023 में यहां परेड का आयोजन किया जा सकता है।भारतीय वायु सेना ने हाल ही में अपना वार्षिक फ्लाई-पास्ट और परेड शो का चंडीगढ़ में आयोजन किया था। इस साल राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के पास स्थित हिंडन एयर बेस पर इसका आयोजन नहीं किया गया था। सेना के अधिकारियों ने कहा कि परेड अब अलग-अलग स्थानों पर आयोजित की जाएगी और हर साल इनकी जगह भी बदली जाएगी। पिछले आठ वर्षों के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अहमदाबाद और चेनई में विदेशी गणमान्य व्यक्तियों की मेजबानी की है। इसके अलावा अन्य राज्य सैन्य प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रमों की मेजबानी कर रहे है। इसका उद्देश्य देश भर के लोगों के साथ गहरा जुड़ाव पैदा करना और शासन को जनता के करीब लाना है।

हस्त शिल्प उत्पादों की लगायी जायेगी प्रदर्शनी-जिलाधिकारी

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने बताया कि आत्म निर्भर भारत के परिप्रेक्ष्य में एक जनपद एक उत्पाद प्रदेश सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना हैं। प्रधानमंत्री के उद्घोष वोकल फॉर लोकल'' के उद्देश्यों की पूर्ति में ओडीओपी की अग्रणी भूमिका है। उन्होंने बताया कि वोकल फार लोकल अवधारणा पर स्थानीय ओडीओपी उत्पादों एवं हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित उत्पादों की प्रदर्शनी दिनांक 23 सितम्बर से 25 सितम्बर तक तुलसीसदन (हादीहाल) प्रतापगढ़ में लगायी जायेगी। प्रदर्शनी में विभिन्न विभागों, हस्तशिल्पियों द्वारा तैयार उत्पाद की प्रदर्शनी, स्टाल लगाये जायेंगे।

डिप्टी सीएम पर हमले में फिर सीएम योगी आदित्यनाथ ने संभाला मोर्चा

(आधुनिक समाचार सेवा)

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानमंडल के सत्र में समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष तथा नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव ने एक बार फिर सरकार पर हावी होने का प्रयास किया। इस बार उनके निशाने पर डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक थे।पाठक पर अखिलेश को हावी होते देख मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक बार फिर मोर्चा संभाला और नेता प्रतिपक्ष को हर बात का तर्क के साथ जवाब दिया।

वाहन की टक्कर से युवक की मौत

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। बांदा हाईवे पर बारा छेत्र अधिकारी कार्यालय के पास मवेशी से टकरा कर बाइक सवार विद्युत कर्मचारी बाइक से नीचे गिर गया उसके बाद उसके ऊपर से एक चार पहिया वाहन चडगया जिससे मौत हो गई शशांक शुक्ला निवासी ग्राम पंचायत थाना बारा मीटर रीडिंग का काम लालापुर क्षेत्र में करता था वह रात में बारा से अपने घर जा रहा था जैसे क्षेत्राधिकारी कार्यालय के पास पहुंचा था वहीं रोड पर किसी जानवर के टक्कर लगने से गिर गया उसी समय प्रयागराज की तरफ से अचानक अज्ञात वाहन आ गया जो चलते हुए भाग निकला मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने बारा पुलिस को सूचना दिया मौके पर पहुंचे उप निरीक्षक कौशलेंद्र सिंह वह विजय पांडे अरुण यादव डीके मौर्या तुरंत सीएससी जसरा ले गए संवाददाता राकेश मिश्रा आधुनिक समाचार बारा

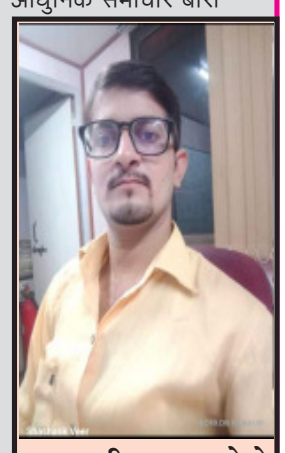

मृतक की फाइल फोटो

रेस्टोरेंट में खाना और महंगे जूते-कपड़े, लूटपाट के बाद इंस्टाग्राम पर शेयर करते थे हिसाब

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। पढ़ने-लिखने की उम्र में अपराध के दलदल में ऐसे धंसे कि बाहर नहीं निकल सके। एक-दो वारदात के बाद जब पुलिस के हाथ नहीं लगे तो मनोबल बढ़ गया। ताबड़तोड़ कई घटनाएं कर डालीं। ऐसे ही पांच युवकों को पूरामुफ्ती पुलिस ने रविवार रात गिरफ्तार किया। इनके पास से 21 मोबाइल, एक टैबलेट, तीन बाइक और 1700 रुपये बरामद किया है। पूछताछ में पता चला कि इंस्टाग्राम पर वांटेड किंग नाम से ग्रुप बना रखा था, जिसमें अपराध का लेखा-जोखा रखते थे। पूरामुफ्ती, धूमनगंज, खुल्दाबाद, करेली समेत अन्य इलाकों में इधर मोबाइल, जंजीर छीनने की कई वारदातें हुई थीं। पुलिस बदमाशों की तलाश में लगी थी, लेकिन सफलता नहीं मिल रही थी। रविवार रात पूरामुफ्ती थाने के एसआइ अमित गुप्ता व रामआधार यादव ने मंदरी पंतरवा तिराहा से सेराज अहमद, सूरज कुमार निवासी पंतरवा, राजेश कुमार निवासी शेखसरवां, रोहित आर्या निवासी लाहुरपुर, अजय कुमार निवासी भवानीदीन तालाब पंतरवा को गिरफ्तार किया। इनके पास से 21 मोबाइल फोन बरामद हुए। तीन बाइक भी मिलीं, जिसमें एक का नंबर खरोंचा गया था, जबकि दो का नंबर प्लेट किसी दूसरे वाहन का था। पूछताछ में बताया कि महंगे शौक पूरा करने के लिए वह दो-तीन माह से घटनाओं को अंजाम दे रहे थे। मोबाइल और जंजीर झपट्टा मारकर छीन लेते थे। सेराज अहमद ने इंस्टाग्राम पर वांटेड किंग नाम से ग्रुप बनाया था। इसमें सभी को जोड़ रखा था। कहां मिलना है और किस इलाके में वारदात करनी है, यह भी इसी ग्रुप पर तय हो जाता था। पूरामुफ्ती एसओ उपेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि सेराज अहमद बीए और अन्य सभी इंटर में हैं। लूट के सामान को औने-पौने दाम पर बेच वह रुपये का आपस में बंटवारा कर लेते थे।

पत्रकारों को धमकाने पर लगेगा जुर्माना 3 साल तक की हो सकती है जेल

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। हाईकोर्ट की टिप्पणी के बाद पीएम और सीएम का भी ऐलान आया है कि, पत्रकारों से अभद्रता करने वालों पर लगेगा 50,000 हजार का जुर्माना एवं पत्रकारों से बदसलूकी करने पर हो सकती है 3 साल की जेल पत्रकार को धमकाने वाले को 24 घंटे के अंदर जेल भेज दिया जाएगा पत्रकारों को धमकी के आरोप में गिरफ्तार लोगों को आसानी से नहीं मिलेगी जमानत पत्रकारों को परेशानी होने पर तुरंत संपर्क कर सहायता प्रदान करें और पत्रकारों से मान-सम्मान से बात करें वरना आप को पड़ेगा महंगा। बदसलूकी करने वाले पुलिस कर्मियों के खिलाफ दर्ज होगी इंे नही तो एसएसपी पर होगी कार्यवाही पत्रकार नही हैं भीड़ का हिस्सा त् पत्रकारों के साथ बढ़ती ज्यादती और पुलिस के अनुचित व्यवहार के चलते कई बार पत्रकार आजादी के साथ अपना काम नही कर पाते हैं, उसी को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रेस काउंसिल के अध्यक्ष मार्कण्डेय काटजू ने राज्य सरकारों को चेतावनी देते हुए निर्देश भी दिया है कि पुलिस आदि पत्रकारों के साथ बदसलूकी ना करे। किसी स्थान पर हिंसा या बवाल होने की स्थिति में पत्रकारों को उनके काम करने में पुलिस व्यवधान नही पहुँचा सकती। पुलिस जैसे भीड़ को हटाती है वैसा व्यवहार पत्रकारों के साथ नही कर सकती। पुलिसवालों या अधिकारियों के विरुद्ध आपराधिक मामला दर्ज किया जायेगा। काटजू ने कहाँ कि, जिस तरह कोर्ट में एक अधिवक्ता अपने मुवक्किल का हत्या का केस लड़ता है पर वह हत्यारा नही हो जाता है। उसी प्रकार किसी सावर्जनिक स्थान पर पत्रकार अपना काम करते हैं पर वे भीड़ का हिस्सा नहीं होते। इसलिए पत्रकारों को उनके काम से रोकना मीडिया की स्वतंत्रता का हनन करना है। प्रेस काउन्सिल ने देश के केबिनेट सचिव, गृह सचिव, सभी राज्यों के मुख्यमंत्री, मुख्य सचिवों व गृह सचिवों को इस सम्बन्ध में निर्देश भेजा है और उसमें स्पष्ट कहा है कि, पत्रकारों के साथ पुलिस या अर्द्ध सैनिक बलों की हिंसा बर्दाश्त नही की जायेगी। सरकारें ये सुनिश्चित करें कि, पत्रकारों के साथ ऐसी कोई कार्यवाही कहीं न हो। पुलिस की पत्रकारों के साथ की गयी हिंसा मीडिया की स्वतन्त्रता के अधिकार का हनन माना जायेगा जो संविधान की धारा 19 एक ए में दी गयी है और इस संविधान की धारा के तहत बदसलूकी करने वाले पुलिसकर्मी या अधिकारी पर आपराधिक मामला दर्ज होगा।

इलाहाबाद विवि में फीस वृद्धि का मामला

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। बीसी ऑफिस के छत पर चढ़ा छात्र गैस सिलेंडर और पाइप लेकर छात्र छत पर चढा आयुष प्रियदर्शी ने आत्मदाह की दी धमकी छात्र ऊपर से छलांग लगाने की दे रहा धमकी फीस वृद्धि वापस लेने की मांग को लेकर प्रदर्शन।

विवाहिता से सामूहिक दुष्कर्म करने वाले घर छोड़ फरार हैं

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। यूपी के प्रतापगढ़ में सामूहिक दुष्कर्म का मामला सामने आया है। एक विवाहिता से दो युवकों ने सामूहिक दुष्कर्म किया है। युवकों के झांसे में महिला आ गई थी। पुलिस आरोपितों की तलाश कर रही है। हालांकि अभी वे अभी पुलिस की पकड़ से दूर हैं।जानें क्या है पूरा मामला सोमवार की रात में करीब आठ बजे एक विवाहिता रानीगंज स्थित अपने घर से बुआ के लड़के के साथ डेरवा बाजार आई। वहां पर बुआ के लड़के ने विवाहिता को धारूपुर मोड़ के पास छोड़ने के बाद वापस लौट गया। डेरवा बाजार स्थित धारूपुर मोड़ पर विवाहिता अपने 3 वर्षीय बेटी के साथ जलेशरगंज अपने रिश्तेदारी जाने के लिए वाहन का इंतजार करने लगी। वाहन के इंतजार में खड़ी थी विवाहिता : महिला अपनी बेटी संग वाहन का इंतजार कर रही थी। उसी दौरान दो युवक वहां पहुंचे। उन्होंने विवाहिता से पूछा कहां जाना है तो उसने जलेसरगंज जाने की बात कही। इस पर युवकों ने उससे कहा कि वे भी उधर जा रहे हैं।

गंगा-यमुना के जलस्तर में बढ़ोतरी जारी प्रयागराज में क्या फिर बाढ़ का खतरा

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। प्रयागराज में गंगा-यमुना के जलस्तर में आज मंगलवार 20 सितंबर को भी वृद्धि जारी है। जलस्तर बढ़ने की रफ्तार रविवार की अपेक्षा बहुत धीमी हुई है लेकिन, अभी भी पानी बढ़ ही रहा है। बीते 24 घंटे की बात करें तो गंगा में मंगलवार सुबह आठ बजे तक अधिकतम 11 सेमी तक जलस्तर में वृद्धि हुई है। इससे दोनों नदियों के किनारे बसे मोहल्लों और गांवों में बाढ़ के संभावित खतरे से लोग परेशान हैं। अभी कुछ दिन पूर्व बाढ़ ने जनजीवन प्रभावित कर दिया था। सिंचाई विभाग ने राहत की खबर दी : सिंचाई विभाग की ओर से गंगा और यमुना नदियों में जलस?तर बढ़ने को लेकर लोगों के लिए राहत भरी खबर भी है। संभावना जताई गई है कि आज रात तक दोनों नदियों का जलस्तर स्थिर हो जाएगा। इसके बाद पानी कम होने लगेगा। कल बुधवार तक पूरी तरह से जलस्तर सामान्य होने की उम?मीद है। हालांकि बाढ़ के पानी ने गंगा-यमुना के कछारी इलाकों में पुनः बाढ़ की सुगबुगाहट शुरू हो गई है। 24 घंटे में कितनी बढ़ा गंगा-यमुना का जलस?तर : सिंचाई विभाग के बाढ़ खंड के कंट्रोल रूम के अनुसार मंगलवार सुबह आठ बजे गंगा का जलस्तर फाफामऊ में 79.00 मीटर, छतनाग में 78.11 मीटर और नैनी में यमुना का जलस्तर 78.72 मीटर रिकार्ड किया गया। अगर वृद्धि की बात करें तो फाफामऊ में चार सेमी, छतनाग में 15 सेमी और नैनी में यमुना का जलस्तर 19 सेमी बढ़ा है। गंगा-यमुना में कहां से आ रहा पानी : मध्य प्रदेश में हो रही बारिश के चलते यमुना के जलस्तर में बढ़ोतरी हुई है। केन, बेतवा, चंबल के बेसिन में वर्षा का पानी जलस्तर को बढ़ा रहा है। यह नदियां यमुना की सहायक हैं। यानी इनका पानी यमुना में मिल रहा है। इससे यमुना के जलस्तर में वृद्धि हो रही है। प्रयागराज में यमुना आकर गंगा में मिल जाती हैं, ऐसे में बाढ़ का पानी प्रयागराज में उफनाने लगता है और बाढ़ की स्थिति बनने लगती है। वैसा ही घटनाक्रम इस समय हो रहा है, बाहर हो रही वर्षा का पानी प्रयागराज में जलस्तर बढ़ा रहा है। रविवार को बहुत तेजी थी जलस्तर में वृद्धि : रविवार को गंगा यमुना के जल स्तर में उफान की स्थिति थी। नैनी में यमुना का जल स्तर एक ही दिन में 2.33 मीटर बढ़ गया था। इससे जल स्तर 78.23 पर पहुंच गया था। फाफामऊ में 44 सेमी गंगा का जल स्तर बढ़ गया था, इससे जल स्तर 78.96 मीटर हो गया था। इसी क्रम में छतनाग में 1.77 मीटर पानी बढ़ने से जल स्तर 77.96 मीटर हो गया था। हालांकि सोमवार की रात गंगा का जलस्तर फाफामऊ में 78.96 मीटर, छतनाग में 78.02 मीटर और नैनी में यमुना का जल स्तर 78.74 मीटर रिकार्ड किया गया। फाफामऊ में जल स्तर में वृद्धि नहीं हुई, छतनाग में छह सेमी और नैनी में यमुना का जल स्तर 31 सेमी बढ़ा था।

508 आर्मी बेस कर्मचारियों ने दिल्ली हावड़ा रेलमार्ग पर लगाया जाम

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। दिल्ली-हावड़ा रेलमार्ग पर मंगलवार को 45 मिनट तक रेल यातायात प्रभावित रहा। छिवकी रेलवे स्टेशन के निकट दुबराजपुर रेलवे क्रासिंग पर सुबह 508 आर्मी बेस कर्मचारियों ने जाम लगा दिया। दिल्ली-हावड़ा रूट पर जाम की सूचना पर रेल विभाग में हड़कंप मच गया सूचना पर आरपीएफ छिवकी मौके पर पहुंची ओर जाम हटाने का प्रयास किया।जाम लगा रहे 508 आर्मी बेस कर्मचारियों का कहना था कि बेस पर बायोमेट्रिक मशीन लग गई है। इसके कारण लेट होने पर उनकी सैलरी कट जाती है। बीते कई माह से समस्या बनी हुई है। इसी को लेकर उनमें आक्रोश था और आज दुबराजपुर रेलवे क्रासिंग को जाम किया। दिल्ली-हावड़ा रूट पर करीब 45 मिनट तक आर्मी बेस के कर्मचारी जाम लगाए हुए थे। इसके चलते ट्रेन संख्या 0166, 4620 लेट हो गई। काफी जद्दोजहद के बाद आरपीएफ के जवानों ने उनका हाथ पकड़ कर वहां से हटाया। तब जाकर दिल्ली-हावड़ा रूट चालू हो सका। उधर दुबराजपुर रेलवे क्रासिंग के दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतार लग गई थी।आर्मी बेस कमिर्यों के हटने के बाद यातायात बहाल हो सका। हालांकि वाहनों को क्रासिंग से निकलने में आधा घंटा समय लगा। इस दौरान गेटमैन से भी नोकझोंक हुई।

कंक्रीट में जड़ कर सड़कों से बाँध दिये गये पेड़, पानी को तरसी जड़े

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। संगम नगरी में फुटपाथ टाइलिंग और सीमेंटिंग के कारण पेड़ अपनी जड़ें नहीं फैला पा रहे हैं। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के आदेशों की धज्जियां उड़ाते हुए पेड़ों को टाइल, सीमेंट या सड़क के साथ ही बांध दिया गया है। शहर के एल्गिन रोड, पीडी टंडन रोड, कमला नेहरू मार्ग, कस्तूरबा गांधी मार्ग, शिवराम दास गुलाटी मार्ग आदि इलाक़ों में अधिकारियों की अदूरदर्शिता के कारण सड़क बनाते समय किनारे के पेड़ों की जड़ को अलकतरे से बांध दिया गया है शहर को लोगों की आंखों में सजाने के लिए पेड़ों की सांस पर ही पहरे लगा दिए गए हैं जिसके कारण आज पेड़ों को जिंदा बचे रहने की जद्दोजहद करनी पड़ रही है। इस जद्दोजहद की निशानी कई जगह फूटपाथ में देखी जा सकती है। जहां पर लगे टाइलों को जड़ों ने तोड़ना शुरू कर दिया है गौरतलब है की नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने पेड़ की जड़ के एक मीटर दायरे में किसी भी तरह के निर्माण पर रोक लगा रखी है, ताकि जड़ों को हवा-पानी नसीब हो। लेकिन विभागीय अफ़सरों को सड़क बनाते समय पेड़ और बिजली के खंभे में कोई अंतर ही नहीं दिख रहा है अच्छे-खासे बड़े और छायादार पेड़ों की सांसें अलकतरा और सीमेंट के सहारे रोकी जा रही हैं।अपनी जड़ों के सड़क के साथ जकड़ जाने के कारण पेड़ अपने स्वभाव अनुसार उनको फैला नहीं पाते हैं। शहरी क्षेत्रों मे व्यापक पैमाने पर कंक्रीटीकरण से वैसे ही भूजल में कमी है। उस पर पेड़ों को भी कंक्रीट मे बांधने से जड़ों को पानी नही मिल पाता है और पेड़ एक समय बाद बढ़ना बंद कर देते हैं। बता दें कि पेड़ों को इस तरह से घेरने के कारण चेनन्ई में लगभग 17 हजार पेड़ बर्बाद हो गए थे। इसी पर एनजीटी ने आदेश दिए थे। एनजीटी का निर्देश है कि पेड़ों के एक मीटर के दायरे में निर्माण नहीं होगा। पेड़ों में पानी जाने के लिए खुली मिट्टी रहनी चाहिए। एनजीटी ने सख्ती से इसके अनुपालन का निर्देश भी दिया है।

उठो जवानों भारत माँ का ऋण अब तुम्हें चुकाना है

(आधुनिक समाचार सेवा)

भदोही। प्राथमिक विद्यालय बीरमपुर,भदोही में चंद्रकांत भ्रमर द्वारा आयोजित विराट कवि सम्मेलन में देश के सुप्रसिद्ध कवि डॉ0रणजीत सिंह ने जब अपनी वीर रस की कविता -भारत माता के सोए सिंहों को हमें जगाना है, उठो जवानों भारत माँ का ऋण अब तुम्हें चुकाना है- का वाचन किया तो पूरा पंडाल जोश से लबरेज हो गया।श्रोताओं ने उन्हें मालाओं से लाद दिया। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से आतंकवाद,सीमा पर बैरियों द्वारा किया जा रहे कुठाराघात पर शब्द बाण चलाते हुए राष्ट्रवाद का शंखनाद किया। अमेठी के कवि रामबदन शुक्ल पथिक ने जहाँ अपनी कविता मलकिन तो प्रधान होइ गई से लोगों को खूब हँसाया और गुदगुदाया तो बेहोश जौनपुरी के दरोगा जी की डायरी का व्यंग्य और नेताओं पर पढी रचना ने लोगों को सोचने को मजबूर कर दिया।प्रयागराज के वीरेंद्र सिंह कुसुमाकर की ओजपूर्ण रचनाओं ने लोगों को रोमांचित किया तो अरुण प्रयास के गीतों ने सबका मन मोहा।जया मिश्रा की नारी प्रधान रचना को लोगों ने मन से सुना तो आनंद अमित, सृष्टि राज और सन्दीप हियराजी ने भी काव्य पाठ किया।अध्यक्षता उमाशंकर सिंह मधुकर तथा संचालन संदीप कुमार बालाजी ने किया।मुख्य अतिथि उपन्यासकार डॉ0जे0एस0बिन्द ने साहित्य के महत्व पर प्रकाश डाला।आभार प्रदर्शन संयोजक ओम प्रकाश ओम ने किया।

वन विभाग की छापेमारी में दुकान में मिली प्रतिबंधित शंख

(आधुनिक समाचार सेवा)

बलिया। शहर में रविवार की शाम छापेमारी में एक दुकान से प्रतिबंधित जानवरों के अंग बरामद होने के बाद बाजार में हड़कंप मचा हुआ है। दूसरे दिन भी दो दुकानों पर छापेमारी की गई। इस दौरान नाखून, कस्तूरी, शाही के कांटे आदि बरामद हुए हैं। दरअसल, रविवार की शाम शहीद पार्क चौक स्थित जड़ी-बूटी की दुकान में छापेमारी टीम पहुंची। दुकान में जानवरों के अंग होने की शिकायत किसी व्यक्ति ने वन्य जीव प्राधिकरण को दी थी।

प्रतिबंधित शंख मिलने पर दो भाइयों अनिल व संजीव को हिरासत में ले लिया गया। बरामद छोटी-बड़ी लगभग 100 शंखों की बाजार में बिक्री प्रतिबंधित है। जानवरों के अंगों का जड़ी-बूटियों में प्रयोग किया जाता है। इसे तंत्र-मंत्र में भी उपयोग करते हैं। दुकान से हिरन, भालू की खाल के टुकड़े, यहां शेर के वहां से एक अधिकारी बलिया पहुंचे। यहां पुलिस के साथ छापेमारी की कार्रवाई की गई। इस दौरान दुकान से प्रतिबंधित जानवरों के अंग मिले। इन्हें जब्त करते हुए दुकान संचालक पारसनाथ गुप्ता व रोशन को गिरफ्तार कर लिया। बड़ा सवाल, कहां से लाए गए अंगवन विभाग पता लगाने की कोशिश में जुटा है कि जानवरों के अंग कहां से लाए गए। इसके तार कहां तक जुड़े हैं इसका पता लगाया जा रहा है। इसमें किसी गिरोह के शामिल होने की संभावना भी जताई जा रही है। रोचक रहा छापेमारी का घटनाक्रमदुकान पर ग्राहक बनकर पहुंचे अधिकारी रविवार को छापेमारी से पहले का घटनाक्रम काफी रोचक रहा। शिकायत मिलने पर दिल्ली से कुछ दिन पहले वन्य जीव प्राधिकरण के एक अधिकारी बलिया पहुंचे। उन्होंने चौक क्षेत्र में घूमकर जायजा लिया। कारवाई से एक दिन पहले वह पारसनाथ गुप्ता की दुकान पर पहुंचे। उन्होंने ग्राहक बनकर जानवरों के अंगों के बारे में जानकारी ली। इसके बाद बाद पुष्टि होते ही पुलिस व वन विभाग की टीम के साथ छापेमारी की गई तो सच्चाई सामने आ गई। कई राज्यों से जुड़ सकते हैं तार जानवरों के अंगों की तस्करी के तार कई राज्यों से जुड़ सकते हैं। ऐसे जानवरों के अंग मध्य प्रदेश, राजस्थान व अन्य राज्यों से लाए जाने की संभावना जताई जा रही है। जांच टीम इसकी तह तक पहुंचने में लगी है। जांच से जुड़े अधिकारियों का मानना है कि प्रतिबंधित शंख भी प्रदेश के बाहर से ही मंगाई गई होगी। सीओ सिटी प्रीति त्रिपाठी ने बताया कि इस मामले में विधिक कार्रवाई वन विभाग की ओर से कराई जा रही है।

हमें राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए गर्व का अनुभव होना चाहिए रामाश्रय पाण्डेय मण्डल रेल प्रबंधक

(आधुनिक समाचार सेवा)

वाराणसी। पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय की भारतेन्दु सभा कक्ष में राजभाषा पखवाड़ा का शुभारम्भ एवं मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय की अध्यक्षता में किया गया। इस दौरान मण्डल रेल प्रबंधक ने कहा कि राजभाषा हिंदी से जुड़ने या इसे याद करने का कार्य कोई एक दिन नहीं होना चाहिए। इससे कि वास्तविकता तो यह है कि राजभाषा हिंदी से जुड़ने या इसे याद करने का कार्य कोई एक दिन नहीं होना चाहिए।इससे वर्ष पर्यन्त लगाव या जुड़ाव बना रहना चाहिए। केवल कार्यालय कार्यों में ही नहीं बल्कि जीवन के प्रत्येक कार्य में हिंदी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए क्योंकि इसी से हमारी पहचान बनती हैं। हमें राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए गर्व का अनुभव होना चाहिए। अभी हाल ही में 09 सितम्बर,2022 को इसी

वर्ष पर्यन्त लगाव या जुड़ाव बना रहना चाहिए। केवल कार्यालय कार्यों में ही नहीं बल्कि जीवन के प्रत्येक कार्य में हिंदी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए क्योंकि इसी से हमारी पहचान बनती हैं।उन्होंने कहा कि हमें राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए गर्व का अनुभव होना चाहिए। बैठक मे संबोधित करते हुए मंडल रेल प्रबंधक रामाश्रय पाण्डेय ने हिंदी दिवस के इस अवसर पर राजभाषा पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति मे उपस्थित सभी का आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि आप सभी जानते हैं कि 14 सितंबर,1949 में संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसे परस्पर बनाए रखने के लिए पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा पूर्व की भांति इस वर्ष भी राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा हैं। उन्होंने कहा सभाकक्ष में खड़ी बोली हिंदी के पितामह स्वरुप भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र जी की जयंती भी बड़ी धूम-धाम से मनाई गई थी उन्ही की उक्ति हैं कि निज भाषा उननति अहै, सब उननति को मूल !!बिन निज भाषा- ज्ञान के मिटत न हिय के सूल !! मण्डल रेल प्रबंधक ने कहा कि हिंदी की उपादेयता और प्रासंगिकता भारतेंदु जी की इन पक्तियों में पूरी तरह परिलक्षित होती हैं। राजभाषा हिंदी सभी के हृदय तक पहुंचे, सभी को स्पर्श करें,इसके ध्यातव्य आज इस समिति के सदस्यों के बीच एक राजभाषा संबंधी प्रशनेत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया हैं आज की बैठक में राजभाषा बैठक के अवसर पर सभी का स्वागत करते हुए अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक(इन्फ्रा) ज्ञानेश त्रिपाठी ने कहा सर्वप्रथम में हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित राजभाषा पखवाड़ा के अंतर्गत मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की इस बैठक में आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूँ। जैसा कि विदित है राजभाषा पखवाड़ा 19 सितम्बर से 30 सितम्बर,2022 तक मनाया जा रहा है। जिसमे समिति के सदस्यों के लिए प्रशनेत्तरी प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता एवं हिंदी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से किया गया है। इसके साथ ही 30 सितम्बर को राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर एक काव्यपाठ तथा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का भी आयोजन किया जायेगा । उक्त आयोजनों में आप स्वयं तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ अवश्य भाग लेवें।उम्मीद हैं कि इस दिशा में आप सभी का सहयोग हमेशा मिलता रहेगा और हमारा मंडल राजभाषा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाता रहेगा।इस दौरान अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा)ज्ञानेश त्रिपाठी, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री संजीव शर्मा,वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री समीर पॉल,वरिष्ठ मंडल इंजीनियर प्रथम श्री ऋषि श्रीवास्तव, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर द्वितीय श्री सत्यम सिंह,अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ कल्पना दुबे,वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक(सामान्य) श्री ए के सक्सेना, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर(हिंप्स) आलोक केशरवानी,वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर(सामान्य) श्री पंकज केशरवानी,वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजिनियर(कर्षण) श्री आर एन सिंह, वरिष्ठ मंडल आंकड़ा एव संसाधन प्रबंधक श्री एस एन राम, राजभाषा अधिकारी श्री विजय प्रताप आर्य एवं स्टेशन राजभाषा समिति के सदस्यगण समेत सभी मंडलीय अधिकारीगण उपस्थित रहे। इसके पूर्व सभी का स्वागत करते हुए राजभाषा अधिकारी श्री विजय प्रताप आर्य ने गृहमंत्री एवं रेलमंत्री द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर जारी संदेशों का वाचन किया।

दवा कारोबारी दंपति की मौत का मामला- परिजनों ने मदद की मांग को लेकर शुरू की भूख हड़ताल

(आधुनिक समाचार सेवा)

आजमगढ़। अहरौला क्षेत्र के पारा गांव निवासी इंद्रपाल मौर्य और उनकी पत्नी शकुंतला की जून माह में अपहरण के बाद हत्या और डिप्टी सीएम के आश्वासन के बाद भी कोई सरकारी सहायता न मिलने से नाराज दंपति के स्वजन ने सोमवार को फिर आंदोलन की राह पकड़ ली। अंबेडकर पार्क में भूख हड़ताल शुरू करने के साथ कहा कि जब तक सरकारी सहायता नहीं मिलेगी, तब तक वह पीछे हटने वाले नहीं हैं। जानकारी के मुताबिक, जून माह में 14 तारीख को दवा व कारोबार के सिलसिले में जौनपुर के शाहगंज गए दंपति का 16 जून को फूलपुर क्षेत्र के अंबारी में शव पाया गया था। हत्या के बाद पीड़ित परिवार से प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने मुलाकात कर मुआवजा दिलाने सहित हर संभव मदद का आश्वासन दिया था। इस दौरान एसडीएम द्वारा परिवार को 25 लाख की मदद की बात भी कही गई थी। मृत दंपति के पुत्र शिवांश मौर्य ने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ भूख हड़ताल शुरू कर दी। शिवांश ने आरोप लगाया कि किसी प्रकार की मदद शासन-प्रशासन की ओर से नहीं दी गई। मदद के बाबत कई बार डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य से मुलाकात किया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आर्थिक तंगी के चलते हम तमाम समस्याओं से जूझ रहे हैं। हमारी शिक्षा बुरी तरह प्रभावित हो रही है। हम लोग घर पर ही भूखे मर रहे हैं, इसलिए यहां भूख हड़ताल पर बैठे हैं। हत्यारों की गिरफ्तारी के बाबत शिवांश ने बताया कि जिनकी गिरफ्तारी हुई है वह सही है और जो लोग हैं हत्याकांड में शामिल रहे उनकी भी गिरफ्तारी होनी चाहिए। शिवांश ने मांग किया कि उसे सरकारी नौकरी दी जाए और जो मदद का आश्वासन दिया गया वह पूरा किया जाए। भूख हड़ताल पर बैठने की जानकारी मिलते ही एसडीएम सदर अभय सिंह सीओ सिटी के साथ मौके पर पहुंचे और पत्रक लेकर आश्वासन दिया कि जिलाधिकारी से वार्ता कर उचित निर्णय लिया जाएगा।

नौकरी के नाम पर रुपये लेने वाले की हत्या

(आधुनिक समाचार सेवा)

गाजीपुर। शादियाबाद थाना क्षेत्र के युसूफपुर गांव निवासी शिवचरण राम (45) पुत्र दुर्बल राम निवासी चौरा की पीटकर हत्या कर दी। शव को गांव से चार किमी दूर बेसो नदी के किनारे फेंक दिया। मंगलवार

को सुबह नदी किनारे शव मिलने की सूचना पर स्जवन ने शिनाख्त की है। गांव निवासी शिवचरण राम राजमिस्त्री का काम करता था। स्वजन के मुताबिक शिवचरण राम किसी काम से सोमवार की शाम करीब छह बजे राजमिस्त्री के फोन पर किसी की काल आयी थी। इसके बाद वह फोन घर पर ही छोड़कर निकला था। फिर वापस घर नहीं लौटा। स्वजन ने काफी तलाश की, लेकिन पता नहीं चला। सुबह स्वजन को बेसो नदी के किनारे एक शव मिलने की सूचना मिली। पुलिस व स्वजन मौके पर पहुंचे तो शव की शिनाख्त शिवचरण राम के रूप में परिजनों ने की।प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, शरीर के कई हिस्सों में चोट के निशान थे। अंदेशा है कि पीट कर हत्या करने के बाद शव को नदी किनारे फेंक दिया गया। ग्रामीणों का कहना है कि शिवचरण राम नौकरी दिलाने के नाम पर लोगों से पैसा लेता था। कई लोग अपना पैसा मांगने के लिए उसके घर पर आते रहते थे। इसको लेकर विवाद भी होता था। करीब एक माह पहले कुछ लोग उसे उठाकर ले गए थे। तीन- चार दिन वह उनके चंगुल से छूटकर भाग आया था। हालांकि उसने इसकी शिकायत पुलिस को नहीं दी थी। उधर, नौकरी के नाम पर पैसे देने वालों ने भी पुलिस से कोई शिकायत नहीं की है। शिवचरण के दो पुत्र और चार पुत्री है। पत्नी उर्मिला देवी का रो रोकर बुरा हाल है। सूचना मिलने के बाद फोरेंसिक टीम ने जांच की है। शरीर पर चोट के कई निशान मिले हैं। सीओ भुड़कुड़ा ने स्वजन व ग्रामीणों से घटना के संबंध में जानकारी ली। थानाध्यक्ष घनानंद त्रिपाठी का कहना है कि अभी तहरीर नहीं मिली है। जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

प्रवेश सूचना

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

(आई0 एस0 ओ0 प्रमाणित औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र)

भारत सरकार की कौशल विकास योजना मे समस्त, 2022 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते है। ट्रेड प्रवेश योग्यता तथ प्रस्तुत विविण पाठ्यक्रमों की अवधि के विवरण नीचे दिए गए है।

क्र0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा (कम्प्यूटर ऑपरेटर)	1 वर्ष	12वी पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वी पास
3.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वी पास
4.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वी पास
5.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वी पास
6.	कम्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वी पास
7.	सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वी पास
8.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वी पास
09.	रेफ्रिरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वी पास
10.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वी पास
11.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वी पास
12.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वी पास

प्रस्तुत विभिन्न पाठ्क्रमों में रिक्त की उपलब्धता तथा दाखिला शुल्क का विवरण संस्थान की वेबसाइट पर देखे।

1. **प्रमाण पत्रः** सफलप्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय ट्रेड प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो सेवा में भर्ती के लिए मान्य योग्यता है।
2. **चयन की प्रक्रियाः** इस वर्ष कोविड–19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ पहले पाओं के आधार पर किये जायेंगे।
3. **आयुः** उम्मीदवार की आयु 1 अगस्त, 2022 को न्यूनतम 14 वर्ष या उससे अधिक होनी चाहिए।
4. **आवेदन कैसे करेः** ओवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है।
   नोटः आवेदन फार्म भरते हुए रू 2665 का पंजीकरण शुल्क भी (अप्रतिदेय) होगा।
5. **बस पासः** सरकार द्वारा विद्यार्थियों के लिए प्रति माह में रियायती एसी बस पास सुविधा उपलब्ध है, जो कि सभी बसों में मान्य है।
6. **छात्रवृत्तिः** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिसके पास आय प्रमाण पत्र हो, वो भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है।
7. अधिक जानकारी तथा ऑनलाइन आवेदन के लिए संस्थान की वेबसाइट www,nainiiti.com देखें।
8. दाखिले की अंतिम तिथिः 30 सितंबर 2022
9. सफल अभ्यार्थियों को भारत सरकार द्वारा रू 7700 प्रति माह की अप्रेंटिसशिप सुविधा उपल्बध है।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

सम्पर्क सूत्रः– 7518828710, , 9415608710, 6386474074, 9415608790

4 साल बीतने के बावजूद भी गुरमुरा व आसपास टोले रोशन नहीं हो सके

सौभाग्य योजना के तहत दिया गया था मीटर व तार

(आधुनिक समाचार सेवा)

(डाला) सोनभद्र। चार साल बीतने को है, मगर सौभाग्य योजना के तहत चयनित बिजली से वंचित हैं गुरमुरा व आसपास के टोले रोशन नहीं हो सके। मजे की बात यह है

कि आधे-अधूरे कार्य के बावजूद जिले को सौभाग्य घोषित कर दिया गया। विद्युतीकरण के लिए ग्रामीण तीन वर्षों अफसरों के कार्यालय के चक्कर लगाते रहे, मगर अधिकारी के आंख बंद किए हैं कोई इन आदिवासी ग्रामीणों की समस्या सुनने तैयार नही है। जिले में बिजली से वंचित गांवों को रोशन करने के लिए सौभाग्य योजना की शुरुआत की गई। चार साल पहले योजना का शुभारंभ हुआ। पूरे जिले को बिजली से संतृप्त करना था। इसके लिए बिजली से वंचित मजरों व पुरवों की सूची तैयार की गई। विद्युत विभाग की टीमों ने गांव-गांव भ्रमण कर सूची तैयार की जहां विद्युतीकरण किया जाना था। विद्युतीकरण का कार्य पूरा हो सके। लेकिन ग्रामीणों का कहना हैं कि कैसे बिजली विभाग के अधिकारी सर्वे किए थे कि सैकड़ों घर के बीच मे सिर्फ एक 16केबी का ट्रांसफार्मर दिया गया जिस पर लगभग 40से 42 कनेक्शन धारक हैं जबकि ग्यारह हजार का पोल गांव से जा रहा है जिसपर करंट भी दौड़ रहा है लेकिन ट्रांसफार्मर का प्वाइंट नही नही दिया गया जिसके कारण गांव के कई टोलों के ग्रामीण बिजली कनेक्शन से वंचित रह गए जब कि आदिवासी ग्रामीण बिजली विभाग के जेई से लेकर एक्सईएन आफिस तक कई बार एप्लिकेशन व चक्कर लगाए परन्तु अभी तक अधिकारी के कान पर जू तक नही रेंगा जिससे गुरमुरा के आदिवासी ग्रामीण क्षुब्ध होकर जोरदार प्रदर्शन करते हुए जल्द से जल्द ट्रांसफार्मर कराया जाए और बिजली कनेक्शन की मांग की। इस सम्बंध में बिजली विभाग के जेई रामलाल ने कहा कि यह जांच का विषय हैं जांच करने के बाद ही बताया जा सकता है कि वहां सैकड़ों घर के बाद भी एक ट्रांसफार्मर वह भी 16केबी का क्यों दिया गया हैं। मौके पर नन्दलाल गोड़, भोला गोड़,विनय गोड़,कैलाश गोड़,भागीरथी गोड़, त्रिलोकी गोड़, कमला, विजय, शंकर देव ,धन्नू गोड़, विशाल, कन्हैयालाल आदि आदिवासी ग्रामीण मौजूद रहे। बहरहाल सरकार द्वारा चलाई सौभाग्य योजना को बिजली विभाग की लापरवाही का नतीजा है जो आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में अभीतक बिजली से वंचित हैं जो सरकार की छवि को धूमिल करने का कार्य बिजली विभाग कर रहा हैं।

गैंग बना कर छिनैती करने वाले गिरोह का हुआ पर्दाफाश

(आधुनिक समाचार सेवा)

सोनभद्र। थाना रॉबर्ट्सगंज जनपद सोनभद्र क्षेत्र में हुई चोरियों/छिनैती का खुलासा करने हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम मे पुलिस अधीक्षक सोनभद्र डॉ0 यशवीर सिंह के निर्देशन में तथा अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) के निकट पर्यवेक्षण में एवं क्षेत्राधिकारी नगर के नेतृत्व मे दिनांक 18.09.2022 समय लगभग 4.00 बजे शायंकाल थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस टीम द्वारा कमोजी तिराहे के पास से दो नफर अभियुक्तगण आनंद उर्फ बाबू पुत्र

गनेश प्रसाद, निवासी खटौली, थाना रॉबर्ट्सगंज, जनपद सोनभद्र, उम्र लगभग 22 वर्ष, सुनील कुमार पुत्र लक्षनधारी, निवासी परासीदूबे, थाना रॉबर्ट्सगंज, जनपद सोनभद्र, उम्र लगभग 21 वर्ष को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से चोरी/छिनैती के दो अदद मोबाईल, 15000 रूपये नगद, एक अदद स्टील का टिफिन, एक अदद पीली धातु का लॉकेट, एक अदद अंगूठी सफेद धातु, दो अदद बिछिया सफेद धातु, एक अदद मोटरसाइकल 64 0241 बरामद किया गया । उपरोक्त बारामद सामान 1.मु0अ0सं0628/2022 धारा 356, 379 भा0द0वि0, 2.मु0अ0सं0-709/2022 धारा 356, 379 भा0द0वि0, 3.मु0अ0सं0-711/2022 धारा 379, 356 भा0द0वि0, थाना रॉबर्ट्सगंज जनपद सोनभद्र से सम्बन्धित है। गिरफ्तारी/बरामदगी के आधार पर अभियोग उपरोक्त में धारा 411 भा0द0वि0 की बढ़ोत्तरी करते हुए अग्रिम वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। **पूछताछ का विवरण** - पूछताछ मे गिरफ्तारशुदा अभियुक्तों द्वारा बताया गया कि हम दोना मोटरसाइकेल से घूम घूमकर अपना शिकार खोजते है तथा मौका पाकर छिनैती की घटना को अन्जाम देते है। **गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम** - उ0नि0 प्रमोद कुमार यादव, प्रभारी चौकी चेरुई, थाना रॉबर्ट्सगंज,उ0नि0 संजीव कुमार राय, थाना रॉबर्ट्सगंज, हे0का0 कमलेश सिंह यादव, चौकी चेरुई, थाना रॉबर्ट्सगंज, का0 नवीन कुमार चौरसिया, थाना रॉबर्ट्सगंज, का0 गौरव कुमार, थाना रॉबर्ट्सगंज, जनपद सोनभद्र।

16 वर्षीय नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म करने वाले गुड्डू यादव एवं रामप्रीत को आठ वर्ष बाद मिली सजा

(आधुनिक समाचार सेवा)

सोनभद्र। आठ वर्ष पूर्व 16 वर्षीय नाबालिग लड़की के साथ हुए दुष्कर्म के मामले में अपर सत्र न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश पॉक्सो एक्ट सोनभद्र निहारिका चौहान की अदालत ने सोमवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी गुड्डू यादव को 10 वर्ष की कैद एवं 40 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। वहीं अर्थदंड न देने पर 6 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी पड़ेगी। वहीं दोषी रामप्रीत खरवार को 7 वर्ष की कैद व 10 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर 5 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। अर्थदंड की समूची धनराशि 50 हजार रुपये पीड़िता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक पिपरी थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी व्यक्ति ने 10 सितंबर 2014 को पिपरी थाने में दिए शिकायती पत्र में आरोप लगाया था कि उसकी 16 वर्षीय नाबालिग बेटी जो कक्षा 10 की छात्रा थी को 4 सितंबर 2014 की शाम 7 बजे पिपरी थाना क्षेत्र के मूर्धवा निवासी गुड्डू यादव व रामप्रीत खरवार बहला फुसलाकर भगा ले गया और उसके साथ गुड्डू ने दुष्कर्म भी किया। पिपरी पुलिस ने 10 सितंबर 2014 को पॉक्सो एक्ट एवं दुष्कर्म समेत अन्य धाराओं में एफआईआर दर्ज कर मामले की विवेचना शुरू कर दिया। विवेचना के दौरान विवेचक ने पर्याप्त सबूत मिलने पर न्यायालय में चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई करते हुए अदालत ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने पर दोषसिद्ध पाकर दोषी गुड्डू यादव को 10 वर्ष की कैद एवं 40 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड अदा न करने पर 6 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं दोषी रामप्रीत खरवार को 7 वर्ष की कैद व 10 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर 5 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बितायी अवधि सजा में समाहित होगी। वही अर्थदंड की समूची धनराशि 50 हजार रुपये पीड़िता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष की तरफ से सरकारी वकील दिनेश प्रसाद अग्रहरि,सत्य प्रकाश त्रिपाठी एवं नीरज कुमार सिंह एडवोकेट ने बहस की।

दुष्कर्म के दोषी गुड्डू को 10 वर्ष, रामप्रीत को 7 वर्ष की कैद
- **50 हजार रुपये अर्थदंड, न देने पर 6 माह की अतिरिक्त कैद**
- **आठ वर्ष पूर्व 16 वर्षीय नाबालिग लड़की के साथ हुए दुष्कर्म का मामला**
- **अर्थदंड की समूची धनराशि 50 हजार रुपये पीड़िता को मिलेगी**
- **जेल में बितायी अवधि सजा में समाहित की जाएगी**

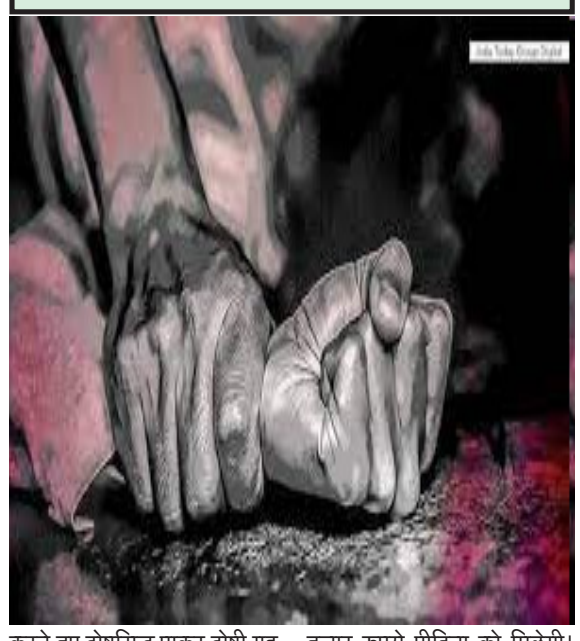

डाला में भाजपाइयों ने चलाया स्वच्छता अभियान

(आधुनिक समाचार सेवा)

(डाला) सोनभद्र। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिवस पर 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक चलाए जा रहे सेवा पखवाड़ा के तहत आज मंगलवार को स्थानीय नगर के नई बस्ती समेत विभिन्न स्थानों पर भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा साफ सफाई कर स्वच्छता अभियान चलाया गया। नई बस्ती में भाजपा पूर्व मंडल अध्यक्ष मुकेश जैन के नेतृत्व में गलियों कि विधिवत साफ सफाई कर कचरा उठाकर उसका निस्तारण कराया गया। उन्होंने कहा कि हमें हमेशा प्रयास करना चाहिए कि हमारा नगर साफ सुथरा रहे, गंदगी का

निस्तारण नियत स्थान पर ही करें ताकि स्वच्छता कर्मियों को सफाई करने में आसानी हो इससे स्वच्छता कमिर्यों का भी सहयोग हो जाएगा। कहा कि मानव जीवन का स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी पूंजी है स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता अति आवश्यक है अगर स्वच्छता को वास्तव में जन-जन तक पहुंचाने का काम किसी ने किया है तो वह हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है, उनके जन्मदिन पर भारतीय जनता पार्टी द्वारा एक उत्सव के रूप में विभिनन कार्यक्रमों का आयोजन जनपद समेत सभी मंडलों में किया जा रहा है।इस दौरान मुकेश जैन ,नीरज द्विवेदी, विशाल कुमार,रिशु जायसवाल, पिंटू मोदनवाल आदि मौजूद रहे।

ट्रांसफार्मर जलने से ग्रामीण परेशान पेयजल की समस्या बढ़ी

(आधुनिक समाचार सेवा)

(डाला) सोनभद्र। ग्राम पंचायत बिल्ली मारकुंडी के डाला बाड़ी सिकटहवा टोला मे ट्रांसफार्मर से ग्रामीण हुए परेशान बढ़ी पेयजल के संकट को ग्रामीणों ने किया विरोध प्रदर्शन मिली जानकारी के मुताबिक सोमवार को चोपन विकास खंड के ग्राम पंचायत बिल्ली मारकुंडी सिकटहवा टोला में ट्रांसफार्मर दो से तीन पूर्व जल गया जिससे प्रकाश सहित पेयजल की समस्या उत्पनन हो गई वहीं दो सप्ताह पूर्व पेयजल आपूर्ति को लेकर बोरिंग की टंकी लगाया गया था जो जल चुका है बताते चलें कि इस टोला में लगभग सौ घर है जहां इस विजली एवं पेयजल आपूर्ति के लिए मात्र एक संसाधन है साथ ही आसपास के क्षेत्र में खनन व क्रशर प्लांट संचालित होता है जहां ट्रांसफार्मर जलने के बाद तत्काल ही ट्रांसफार्मर बदल दिए जाते है और वहीं सिक्टहवा टोला के ग्रामीण को ट्रांसफार्मर बदलने में कई हफ्तों लग जाते हैं फिर भी ट्रांसफार्मर नहीं बदल पाता है वहीं ग्रामीणों को मजबूर होकर पेयजल को लेकर दूर दराज संपर्की क्रशर प्लांटों से पानी लाना पड़ता है जिसको लेकर स्थानियो ने विरोध प्रदर्शन कर शासन प्रशासन का ध्यान आकर्षित करवाते हुए ट्रांसफार्मर बदलने के साथ पानी के मोटर को जल्द से जल्द मरम्मत करवाने की मांग की गई इस दौरान संजय भारती पुष्प देवी राम जी रिंकू बाबूलाल नन्हकू सहित के साथ आसपास की महिलाएं रही शामिल।

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्जापुर। जिले के अलग-अलग कोतवाली पुलिस ने सोमवार को शांतिभंग में 32 व्यक्तियों का चालान कर दिया। पुलिस के अनुसार कटरा कोतवाली एक, विंध्याचल दो, शहर तीन, देहात तीन, कछवां एक, पड़री पांच, चुनार छह, जमालपुर चार, लालगंज दो व मड़िहान पुलिस ने पांच व्यक्तियों का चालान किया है।

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्जापुर। मिर्जापुर में गंगा के जल स्तर में दोबारा वृद्धि स्टार्ट होने की वजह से लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है अगर यही हाल रहा तो नवरात्र के समय में लोगों को पूजा पाठ में दिक्कत होने की संभावना बन रही है गंगा के किनारे बने कई सेट दोबारा पानी में डूब चुके हैं स्थिति भयावह हो सकती है जिससे शासन प्रशासन ने स्थिति को गंभीरता से लिया है।

पशुओं के उपचार के लिए मिली मोबाइल एंबुलेंस

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्जापुर। हलिया ब्लाक मुख्यालय पर स्थित पशु अस्पताल के लिए सोमवार को एक पशु मोबाइल एंबुलेंस उपलब्ध हुआ। इस सुविधा से क्षेत्र में बीमार पशुओं का उपचार किया जाएगा। क्षेत्र में बीमार पशुओं की सूचना मिलते ही 102, 108 की तर्ज पर सायरन बजाते हुए उक्त पशु मोबाइल एंबुलेंस सेवा लोगों के घर व दरवाजे तक पहुंचेगी। इसमें तैनात चिकित्सक व फार्मासिस्ट बीमार पशुओं का परीक्षण कर मौके पर ही उपचार करेंगे। जरूरत पड़ने पर पशुओं के गोबर व खून की जांच भी की जाएगी। पशु मोबाइल एंबुलेंस सेवा के लिए किसानों को टोल फ्री नंबर 1962 पर फोन करना होगा।

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्जापुर। मातृ नवमी पर अष्ठभुजा पहाड़ पर सीताकुंड पर सुबह से शाम तक हजारों की संख्या में महिलाएं सनन कर तर्पण कर अनाज सहित अपने पितरों से सुख,शांति और समृद्धि का आशीर्वाद प्राप्त किया। पितरों के लिए एक पक्ष ही निर्धारित किया गया है । पितृपक्ष में कुल सोलह तिथियां हैं, जो पूर्णिमा से प्रतिपदा तक चलता है। जिन लोगों को अपने माता आदि के दिवंगत होने की तिथि का ज्ञान नही होता वो मातृ नवमी को तर्पण करते हैं। मातृ नवमी को बुढ़िया नवमी भी कहा जाता है । इस तिथि को सुहागिनों को भोजन करा कर सुहाग की सामग्री दान देने की प्रथा है।

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्जापुर। मातृ नवमी पर अष्ठभुजा पहाड़ पर सीताकुंड पर सुबह से शाम तक हजारों की संख्या में महिलाएं सनन कर तर्पण कर अनाज सहित अपने पितरों से सुख,शांति और समृद्धि का आशीर्वाद प्राप्त किया। पितरों के लिए एक पक्ष ही निर्धारित किया गया है । पितृपक्ष में कुल सोलह तिथियां हैं, जो पूर्णिमा से प्रतिपदा तक चलता है। जिन लोगों को अपने माता आदि के दिवंगत होने की तिथि का ज्ञान नही होता वो मातृ नवमी को तर्पण करते हैं। मातृ नवमी को बुढ़िया नवमी भी कहा जाता है । इस तिथि को सुहागिनों को भोजन करा कर सुहाग की सामग्री दान देने की प्रथा है।

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्जापुर। किशोरी को बहला फुसलाकर भगाने वाले आरोपित को पुलिस ने सोमवार गिरफ्तार कर लिया। पड़री थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी व्यक्ति ने एक सितबंर को नामजद अभियुक्त के विरुद्ध नाबालिग पुत्री को बहला फुसला कर भगाने का मुकदमा दर्ज कराया। पुलिस ने अभियुक्त धनही गांव निवासी पवन सिंह को पड़री से गिरफ्तार कर लिया। जबकि पुलिस अपहृता को पूर्व में बरामद कर चुकी है।

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्जापुर। जिले के अलग-अलग थानों की पुलिस ने सोमवार को छह वारंटी को उनके घरों से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार हलिया चार, देहात कोतवाली एक व कछवां पुलिस ने एक वारंटी को उसके घर से गिरफ्तार कर लिया।

(आधुनिक समाचार सेवा)

मिर्जापुर। लालगंज पुलिस ने सोमवार को अवैध शराब संग दो अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। अभियुक्तों के पास से तीस लीटर अवैध शराब बरामद हुआ। पुलिस ने अभियुक्त हथेड़ा गांव निवासी पवन कुमार व खजुरी गांव निवासी प्रमोद कुमार को गिरफ्तार कर कार्रवाई में जुट गई है।

24 किलो ग्राम गांजा एवं बीना नम्बर प्लेट कि सुपर स्पेलेण्डर बाइक बरामद हुई

(आधुनिक समाचार सेवा)

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र डॉ0 यशवीर सिंह के निर्देशन में मादक पदार्थों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में क्षेत्राधिकारी सदर के निकट पर्यवेक्षण एवं नेतृत्व में समय रात्रि लगभग 21.40 बजे थाना रायपुर पुलिस द्वारा मुखबिर की सूचना पर ग्राम पड़री के पास से 01 अदद मोटरसाइकिल सुपर स्पेलेण्डर(बिना नम्बर प्लेट) से अवैध मादक पदार्थों की तस्करी हेतु ले जा रहे 01 अदद बोरे में कुल 24 किग्रा गांजा बरामद किया गया। मादक पदार्थों की तस्करी के लिये ले जा रहे अज्ञात 02 नफर तस्कर अंधेरे का फायदा उठाकर मौके से फरार हो गये जिनकी तलाश की जा रही है । उपरोक्त बरामदगी के सम्बंध में थाना रायपुर पर मु0अ0सं0- 77/2022 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट का अभियोग पंजीकृत कर अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है **बरामदगी का विवरण**- 1. 01 अदद बोरे में कुल 24 किग्रा गांजा । 2. एक अदद मोटरसाइकिल सुपर स्पेलेण्डर(बिना नम्बर प्लेट । **बरामद करने वाली पुलिस टीम**- 1. थानाध्यक्ष नागेश कुमार सिंह, थाना रायपुर, जनपद सोनभद्र । 2. उप निरीक्षक राजनारायण यादव, थाना रायपुर, जनपद सोनभद्र । 3. आरक्षी आकाश सरोज, थाना रायपुर, जनपद सोनभद्र । 4. आरक्षी जितेन्द्र कुमार, थाना रायपुर, जनपद सोनभद्र ।

मोहाली में टि20 वर्ल्ड चैंपियन से भिड़ेगी टीम इंडिया, कब और कहां देखें मुकाबला

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली । एशिया कप के बाद टीम इंडिया एक बार फिर से मैदान पर उतरने के लिए तैयार है। इस बार टीम के सामने टी20 वर्ल्ड चैंपियन ऑस्ट्रेलिया है जो श्रीलंका के खिलाफ पिछला टी20 सीरीज जीतकर यहां पहुंची है जबकि टीम इंडिया एशिया कप के फाइनल में पहुंचने में नाकाम रही थी। टी20 इंडिया को कड़ी टक्कर देने के लिए तैयार है। इस मैच में जसप्रीत बुमराह, हर्षल पटेल और केएल राहुल जैसे खिलाडियों पर खास नजर होगी। यदि आप भी इस रोमांचक मैच का आनंद लेना चाहते हैं तो आइए इससे जुड़ी कुछ अहम बातों को जान लेते हैं। पंजाब क्रिकेट एसोशिएशन आइएस बिंद्रा स्टेडियम में होगा भारत और

वर्लड कप से पहले दोनों के पास अपनी परफेक्ट इलेवन को आजमाने का मौका है। हालांकि ऑस्ट्रेलिया टीम चाहकर भी ऐसा नहीं कर सकती है क्योंकि वॉर्नर और मिचेल स्टार्क सहित कई महत्वपूर्ण खिलाड़ी इस दौरे पर नहीं हैं। बावजूद इसके ऑस्ट्रेलिया, टीम ऑस्ट्रेलिया के बीच यह पहला टि20 मैच। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच यह पहला टि20मैच स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क पर देख सकते है। मैच की लाइव स्ट्रीमिंग आप हॉटस्टार ऐप पर देख सकते है। यदि आप इस मैच का आनंद फ्री में लेना चाहते है तो आप डीडी फ्री डिश के स्पोर्ट्स चैनल पर जा सकते है।

सचिन तेंदुलकर के शतकों के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ सकते हैं विराट कोहली: रिकी पोंटिंग

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली । ऑस्ट्रेलिया को दो बार वर्ल्ड चैंपियन बनाने वाले रिकी पोंटिंग ने विराट कोहली को लेकर एक बड़ा दावा किया है। एशिया कप से पहले अपने फॉर्म से जूझ रहे कोहली ने जिस तरह से पूरे साथ इस मामले में सचिन के बाद पोंटिंग के साथ दूसरे नंबर पर हैं। उन्होंने कहा कि 'उनके 71वें शतक का इंतजार थोड़ा लंबा जरूर था लेकिन वह स्वभाविक तौर पर ऑल टाइम फेवरेट हैं और अभी भी उनका करियर बहुत बचा है। रन है। हाँ, मुझे अभी भी लगता है कि उसके लिए यह संभव है, इसमें कोई संदेह नहीं है। मुझे लगता है कि आगे उसके पास कई साल हैं लेकिन अभी भी 30 शतक पीछे है जोकि बहुत होता है। यदि वह हर साल 5 या 6 टेस्ट शतक

एशिया कप में बल्लेबाजी की है उसको देखते हुए उनसे सबकी उम्मीदें बढ़ गई हैं। फैंस के अलावा ऑस्ट्रेलिया के इस लीजेंड को भी उम्मीद है कि कोहली सचिन के 100 इंटरनेशनल शतकों के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ सकते हैं। फिलहाल कोहली 71 इंटरनेशनल शतक के के साथ उनको देखना अच्छा था।जब पोंटिंग से कोहली को लेकर यह सवाल किया गया कि क्या वह सचिन के शतकों के रिकॉर्ड को तोड़ सकते हैं तो उन्होंने कहा 'यदि आप 3 साल पहले यह सवाल करते तो मै हां कहता लेकिन तथ्य यह है कि यह जितना धीमा हो गया लगाए तो यह संभव है। अगर आप इसमें वनडे क्रिकेट और कुछ टी20 भी जोड़ लें तो फिर और भी अच्छा। विराट के लिए आप ना नहीं कह सकते है क्योंकि आप जानते है कि वह सफलता के लिए कितने भूखे है।

ऑस्ट्रेलिया को हराने इस संभावित प्लेइंग इलेवन के साथ मैदान पर उतर सकते हैं रोहित शर्मा

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली । रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय क्रिकेट टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपनी ताकत आजमाने के लिए तीन मैचों की टी20 सीरीज खेलने जा रही है। इस सीरीज का पहला मैच मंगलवार एशिया कप 2022 ज्यादा अच्छा नहीं रहा था ऐसे में लय में आने का उनके पास अच्छा मौका है। रोहित शर्मा पहले ही साफ कर चुके है कि विराट कोहली टीम को तीसरे ओपनर हैं और वर्ल्ड कप में केएल ही ओपनिंग करेंगे ऐसे में आर अश्विन हो सकते हैं। हालांकि अक्षर पटेल को अश्विन के ऊपर तरजीह दी जा सकती है क्योंकि उनकी बल्लेबाजी ज्यादा अच्छी है। जसप्रीत बुमराह व हर्षल पटेल के आने से टीम की गेंदबाजी मजबूत हो गई है और दोनों को ही प्लेइंग

को मोहाली में खेला जाएगा। टी20 विश्व कप 2022 की तैयारी के लिहाज से भारत के लिए हर मैच अहम है और इन मैचों में भारतीय कप्तान रोहित शर्मा व टीम मैनेजमेंट खिलाडियों को पूरी तरह से परखना चाहेंगे। एक तरफ टी20 वर्ल्ड कप 2022 की तैयारी और दूसरी तरफ सीरीज में जीत दोनों ही कप्तान रोहित के लिए अहम होगा ऐसे में वो अपनी बेस्ट प्लेइंग इलेवन के साथ मैदान पर उतरने की पूरी कोशिश करेंगे। भारत के लिए पारी की शुरुआत कप्तान रोहित शर्मा के साथ केएल राहुल करते हुए नजर आ सकते हैं। केएल राहुल के लिए राहुल के पास बड़ी जिम्मेदारी है। तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए विराट कोहली होंगे तो चौथे स्थान पर सूर्यकुमार यादव के बल्ले की चमक दिखेगी। पांचवें नंबर पर रिषभ पंत बल्लेबाजी करते हुए नजर आ सकते हैं, हालांकि दिनेश कार्तिक भी टीम में हैं। वैसे एशिया कप 2022 में कप्तान रोहित शर्मा ने कार्तिक से ज्यादा पंत को मौका दिया था ऐसे में संभावना इस बात की है कि पंत को ही आजमाया जाएगा। छठे नंबर पर तेज गेंदबाजी ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या होंगे जबकि सातवें नंबर पर स्पिन ऑलराउंडर अक्षर पटेल या फिर इलेवन में मौका मिल सकता है। वहीं तीसरे तेज गेंदबाज के रूप में टीम में दीपक चाहर या फिर भुवनेश्वर कुमार में से कोई एक हो सकता है। टीम में बतौर शुद्ध स्पिनर युजवेंद्रा चहल शामिल किए जा सकते हैं और उनका साथ निभाने के लिए अक्षर पटेल या अश्विन में से कोई एक होंगे। रोहित शर्मा, केएल राहुल, विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, रिषभ पंत, हार्दिक पांड्या, अक्षर पटेल/आर अश्विन, हर्षल पटेल, जसप्रीत बुमराह, दीपक चाहर/भुवनेश्वर कुमार, युजवेंद्रा चहल।

जोस बटलर हुए चोटिल, पाकिस्तान के खिलाफ टी20 मैचों के लिए इन्हें बनाया गया इंग्लैंड का कप्तान

कराची। पाकिस्तान और इंग्लैंड के बीच सात मैचों की टी20 सीरीज का पहला मैच मंगलवार से खेला जाएगा, लेकिन इससे ठीक पहले मेहमान टीम के लिए एक बुरी खबर सामने आ गई। टीम के कप्तान जोस बटलर चोटिल हो गए और वो अब इसकी वजह से इस सीरीज के शुरुआती कुछ मैचों में नहीं खेल पाएंगे। जोस बटलर पिंडली में लगी चोट से जूझ रहे हैं और वो पूरी होगी जो चार मैचों की मेजबानी करेगा जबकि अन्य तीन मैच लाहौर में खेले जाएंगे। जोस बटलर टीम के साथ हैं और रिहैबिलिटेशन की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। पाकिस्तान दौरे पर इंग्लैंड क्रिकेट टीम के पास टी20 विश्व कप 2022 के लिए तैयारी के लिए बेहतरीन मौका है। वहीं पाकिस्तान क्रिकेट टीम के हालिया प्रदर्शन को देखें तो वह कुछ खास नहीं रहा है। एशिया कप के फाइनल

तरह से ठीक होने के बाद ही इंग्लैंड की कप्तानी कर पाएंगे। अब उनकी जगह इंग्लैंड टीम की कप्तानी पाकिस्तान की धरती पर मोइन अली करेंगे। जोस बटलर पाकिस्तान के खिलाफ इस टी20 सीरीज के अंत में एक या दो मैच खेल सकते हैं। मंगलवार से शुरू हो रही सीरीज से पहले मोइन अली ने कहा कि इंग्लैंड के लिए दुनिया में कहीं भी किसी भी मैच में अगुआई करना बड़े सम्मान की बात है। साल 2005 के बाद इंग्लैंड का यह पाकिस्तान का पहला दौरा है जिसकी शुरूआत कराची में में टीम को श्रीलंका के खिलाफ करारी हार का सामना करना पड़ा था। फाइनल में मिली हार के कारण पाकिस्तान का मनोबल काफी टूट गया है। इसके साथ टीम के टॉप ऑर्डर में कप्तान बाबर आजम अपने फॉर्म में नहीं है और इंग्लैंड के खिलाफ उनके पास लय में आने का अच्छा मौका होगा। वहीं पाकिस्तान के स्टार तेज गेंदबाज शाहीन अफरीदी भी इस सीरीज में नहीं खेल रहे हैं। ऐसे में इंग्लैंड की कोशिश होगी कि वह इसका फायदा उठाते हुए पाकिस्तान को उसके घर में हराए।

टी20 वर्ल्ड कप 2022 के लिए न्यूजीलैंड ने की 15 सदस्यीय टीम का ऐलान

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली । टी20 वर्ल्ड कप 2022 के लिए न्यूजीलैंड ने 15 सदस्यीय टीम का ऐलान कर दिया। टीम की कमान इस टूर्नामेंट में केन विलियमसन के हाथों में होगी जबकि 35 साल के मार्टिन गप्टिल को भी इस टीम में जगह बनाने से चूक गए। टी20 वर्ल्ड कप 2022 में न्यूजीलैंड की टीम को पहला मैच डिफेंडिंग चैंपियन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलना है और ये मैच 22 अक्टूबर को एससीजी में खेला जाएगा। न्यूजीलैंड की टीम को इस

इस टीम का हिस्सा बनाया गया है जो अपना 7वां टी20 वर्ल्ड कप खेलेंगे। कीवी टीम में नए चेहरे के रूप में फिन एलन और माइकल ब्रेसवेल को शामिल किया गया है। न्यूजीलैंड की टीम ने पिछले वर्ल्ड कप में फाइनल में जगह बनाई थी, लेकिन उसे ऑस्ट्रेलिया के हाथों हार मिली थी। एडम मिल्ने टीम में अपनी जगह बनाने में कामयाब रहे है तो वहीं डेवोन कॉनवे पर फिर से न्यूजीलैंड ने अपना भरोसा जताया है। पिछले टी20 वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड के लिए खेलने वाले काइल जैमीसन इस टीम में जगह नहीं बना पाए क्योंकि वो बैक इंजरी से जूझ रहे है। काइल के अलावा टॉड एस्टल और टिम साइफर्ट भी बार ग्रुप ए में रखा गया है। टी20 वर्ल्ड कप 2022 से पहले न्यूजीलैंड की टीम ट्राई सीरीज में हिस्सा लेगी जो 7 अक्टूबर से क्राइस्टचर्च में शूरू होगा। इस ट्राई सीरीज में न्यूजीलैंड के अलावा पाकिस्तान और बांग्लादेश की टीम हिस्सा लेगी। इस ट्राई सीरीज के जरिए न्यूजीलैंड अपनी तैयारियों को परखेगी और इसके बाद ऑस्ट्रेलिया रवाना हो जाएगी। केन विलियमसन (कप्तान), फिन एलन, ट्रेंट बोल्ट, माइकल ब्रेसवेल, मार्क चैपमैन, डेवोन कॉनवे (विकेटकीपर), लॉकी फर्ग्यूसन, मार्टिन गप्टिल, एडम मिल्ने, डेरिल मिचेल, जिमी नीशम, ग्लेन फिलिप्स, मिचेल सेंटनर, ईश सोढ़ी, टिम साउथी।

राशिफल

मेष-:खुशियों से भरा एक अच्छा दिन। आज आपके सामने आने वाले निवेश के नए अवसरों पर विचार करें।

वृष-:आज का दिन एक नया तोहफा लेकर आया है। आज आपके मन में कई सकारात्मक भावनाएँ आएंगी।

मिथुन-:आज आपको काम की गुणवत्ता बनाए रखनी होगी। अजनबियों पर ज्यादा भरोसा न करें। थकान और चिंता रहेगी।

कर्क-:एक सज्जन के दिव्य वचन आपको संतुष्टि और सांत्वना देंगे। क्रेडिट मांगने वाले लोगों को अनदेखा करें।

सिंह-:आज आपका दिन सामान्य रहेगा। माता की कृपा से किए गए कार्यों में आपको सफलता मिल सकती है। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

कन्या-:आज सुबह आपका मन क्रोधित रहेगा। व्यर्थ का धन व्यय होगा। अगर किसी को गुमराह किया जा रहा है, तो आप उस पर नजर रख सकते हैं, लेकिन आपको इसे गुप्त रूप से करन।

तुला-: अब इसका कोई भी उपयोग दिल पर अतिरिक्त दबाव डालेगा। आप में शीघ्र धन कमाने की प्रबल इच्छा होगी। ऐसा लगता है कि आप पारिवारिक मोर्चे पर बहुत खुश नहीं हैं

वृश्चिक-:आज का दिन आपके लिए शानदार रहेगा। ऑफिस के किसी जरूरी काम में सीनियर आपकी मदद कर सकते हैं, जिससे काम आसानी से पूरे हो जाएंगे।

धनु-:आज किसी व्यवसायी व्यक्ति को नया बिजनेस पार्टनर या ऑफर मिल सकता है। अविवाहितों को लंबे समय बाद मिलने का मौका मिल सकता है।

मकर-:आज आपका आत्मविश्वास और ऊर्जा का स्तर ऊंचा रहेगा। आप यात्रा करने और पैसे खर्च करने के मूड में रहेंगे - लेकिन अगर करते हैं ।

कुंभ-: आज का दिन आत्मविश्वास और उम्मीदों से भरा दिन है। आप जीवन में कुछ करने का निणर्य ले सकते हैं, कुछ नए अनुभव आपको प्राप्त होंगे।

मीन-:प्रेमी का साथ पाना आज सबसे बड़ी चुनौती होगी। आपका प्रेमी आपसे किसी बात को लेकर नाराज हो सकता है। किसी मित्र को परेशानी या परेशानी में देखकर आप भावुक हो जाएंगे।

सहवाग एक रन पर हुए आउट फिर भी गुजरात जाइंट्स का विजय अभियान जारी, अब हरभजन सिंह की टीम को हराया

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली । कोलकाता में शनिवार को चुनौतीपूर्ण मुकाबले में इंडिया कैपिटल्स को हराने वाली गुजरात जाइंट्स का मनोबल सोमवार को इकाना में हाई दिखा। गुजरात ने मणिपाल टाइगर्स को दो विकेट से हरा दिया। मणिपाल की यह दूसरी हार रही, जबकि गुजरात की दूसरी जीत। गुजरात के टाइगर्स ने मणिपाल के 120 रनों के लक्ष्य को 17.2 ओवर में आठ विकेट खोकर हासिल कर लिया लखनऊ के इकाना स्टेडियम में सोमवार को गुजरात जाइंट्स ने टास जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरे मणिपाल टाइगर्स की शुरुआत बेहद खराब रही। पूरी टीम ने निर्धारित ओवरों में आठ विकेट के नुकसान पर 120 रनों का स्कोर खड़ा किया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी वीरेंद्र सहवाग की अगुआई वाली गुजरात जाइंट्स की टीम का दर्शकों ने सहवाग..सहवाग का नाम पुकारकर जोरदार स्वागत किया। हालांकि सहवाग ओवर की तीसरी गेंद पर कैच दे बैठे। सहवाग का विकेट गिरते ही दर्शक हताश हो गए।इसके बाद बल्लेबाजी की कमान

तिलकरत्ने दिलशान ने संभाली। दिलशान से टीम को काफी उम्मीदें थीं पर क्रिस मोफू ने बोल्ड कर बिना खाता खोले ही पवेलियन की राह दिखा दी। दिलशान के बाद पार्थिव पटेल ने केविन के साथ अच्छी साझेदारी की। पार्थिव 17 गेंदों में छह चौके और एक छक्के के योगदान से 34 रनों की शानदार पारी खेल अवाना की गेंद पर शुक्ला को कैच दे बैठे। केविन ओ ब्रायन ने सधी शुरुआत की , पर 19 गेंदों में एक चौके दो छक्के की मदद से 23 रन पर अवाना की गेंद पर कैच आउट हो गए। इसके बाद सिमंस ने 16 गेंदो पर 12 रनों का योगदान किया। तिसारा परेरा और जोगिंदर शर्मा ने 12.3 ओवर तक टीम को पांच विकेट के नुकसान पर 94 रन पहुंचाया, लेकिन कप्तान हरभजन सिंह ने तिसारा परेरा की पारी पर ब्रेक लगाते हुए 22 रन पर आउट कर दिया। टीम का स्कोर 14.4 ओवर में 108 रन था। आठवें नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे ग्रीम स्वान ने ताबड़तोड़ दो चौके लगाते हुए 120 रन पर पहुंचा दिया। मुरलीधरन की गेंद पर एलबीडब्लयू आउट हुए ग्रीम स्वान के बाद इमरित बल्लेबाजी करने उतरे पर विपक्षी गेंदबाज ने वाइड फेंककर टीम को विजय दिला दी।

रोहित,राहुल और विराट ने आस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाजो से निपटने के लिए जमकर इस तरीके से किया अभ्यास

(आधुनिक समाचार सेवा)
चंडीगढ़। मोहाली स्टेडियम में मंगलवार को आयोजित होने वाले टी -20 मैच से पहले भारतीय टीम ने अपनी तैयारियों को अंतिम रूप दिया। आस्ट्रेलियाइ टीम के तेज गेंदबाजो से निपटने के लिए भारतीय बल्लेबाजों ने थ्रो बाल का सहारा लिया। टीम के तीन बल्लेबाजों ने थ्रो बाल पर अभ्यास किया। कप्तान रोहित शर्मा को इंडिया टीम के बैटिंग कोच कोच विक्रम राठौर ने थ्रो बाल कर प्रैक्टिस करवाई। उन्होंने डिफेंस के साथ कई लंबे शाट भी लगाए। रोहित ने नेट पर सबसे ज्यादा 40 मिनट तक अभ्यास किया। केएल राहुल,विराट कोहली ने भी थ्रो बाल और तेज गेंदबाजों के साथ अभ्यास किया। भारतीय टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने रविवार को दिन नेट प्रैटिक्स के दौरान सिर्फ बल्लेबाजी की थी। वहीं मैच के दूसरे दिन उन्होंने अपनी गेंदबाजी को परखा। बुमराह ने इस दौरान रिषभ पंत,सूर्य कुमार यादव, दिनेश कार्तिक और हार्दिक पांड्या को गेंदबाजी करवाई। इसके साथ ही चहल,अक्षर पटेल और आरअश्विन भी गेंदबाजी व बल्लेबाजी करते हुए दिखाई दिए। सोमवार के प्रैक्टिस सेशन पर गौर करें तो अक्षर पटेल की गेंदबाजी व बल्लेबाजी पर टीम के हेड कोच राहुल द्रविड़ नजर

बनाए हुए थे। उन्होंने अक्षर पटेल की सारी प्रैक्टिस को बड़ी गौर से देखा। ऐसे में कयास लगाए जा रहे है कि अक्षर पटेल आस्ट्रेलिया के खिलाफ मैदान में उतर सकते है। उनका लेफ्ट हैंड बैट्समैन होना भी एक प्लस प्वाइंट है। इससे पहले रोहित शर्मा ने कहा था कि हमें रवींद्र जडेजा की कमी खल रही है, लेकिन अक्षर पटेल उनके स्थान को भरने की पूरी काबिलियत रखते हैं। रोहित शर्मा ने अक्षर पटेल को थ्री-फेज बॉलर बताते हुए कहा था कि वो पॉवरप्ले, मध्यक्रम और जरूरत पड़ने पर डेथ ओवर्स में भी गेंदबाजी करने की काबिलियत रखते है।

भारत के बाद पाकिस्तान ने भी टि20वर्ल्ड कप 2022 के लिए लांच की नई जर्सी

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने टी20 वर्ल्ड कप 2022 के लिए आधिकारिक जर्सी का अनावरण रविवार को किया था, लेकिन इसके ठीक एक दिन बाद यानी सोमवार को पाकिस्तान क्रिकेट टीम की आधिकारिक जर्सी टी20 वर्ल्ड कप 2022 के लिए लांच की गई।

पाकिस्तान की महिला और पुरुष टीम दोनों के लिए ही ये जर्सी बनाई गई है। पीसीबी ने इस जर्सी को लेकर एक वीडियो भी जारी की जिसमें पाकिस्तान पुरुष और महिला टीम की खिलाड़ी नई जर्सी पहले नजर आ रहे हैं पाकिस्तान क्रिकेट टीम बाबर आजम की कप्तानी में टी20 वर्ल्ड कप 2022 में खेलती हुई नजर आएगी और नई जर्सी में ये टीम नए अंदाज में दिखेगी। इससे पहले बाबर की कप्तानी में पाकिस्तान की टीम एशिया कप 2022 के फाइनल में पहुंची थी, लेकिन फाइनल मुकाबले में उसे श्रीलंका के हाथों हार का सामना करना पड़ा था और ये टीम तीसरी बार एशियाई चैंपियन बनने से चूक गई थी। बाबर आजम की कप्तानी में पाकिस्तान की टीम टी20 वर्ल्ड कप 2021 के सेमीफाइनल में पहुंची थी जहां उसे ऑस्ट्रेलिया के हाथों हार मिली थी। अब टी20 वर्ल्ड कप 2022 में पाकिस्तान की टीम को ग्रुप बी में रखा गया है जहां उससे पहला ही मैच भारत के खिलाफ 23 अक्टूबर को खेलना है। इससे पहले पाकिस्तान की टीम अभी इंग्लैंड के खिलाफ 7 मैचों की टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट सीरीज खेलेगी जिसकी शुरुआत 20 सितंबर से होगी। इन सात मैचों की टी20 सीरीज के पहले चार मुकाबले कराची में खेले जाएंगे जबकि अन्य तीन मैचों का आयोजन लाहौर में किया जाएगा। इंग्लैंड की टीम पाकिस्तान दौरे पर साल 2005 के बाद आई है और दोनों देशों के बीच 20 सितंबर के अलावा अन्य टी20 मैच 22, 23, 25, 28, 30 सितंबर के अलावा 2 अक्टूबर को खेला जाएगा।बाबर आजम (कप्तान), शादाब खान (उप-कप्तान), आसिफ अली, हैदर अली, हारिस रउफ, इफ्तिखार अहमद, खुशदिल शाह, मोहम्मद हसनैन, मोहम्मद नवाज, मोहम्मद रिजवान, मोहम्मद वसीम, नसीम शाह, शाहीन शाह अफरीदी, शान मसूद, उस्मान कादिर।

सम्पादकीय

पसमांदा मुसलमान और बीजेपी का गुणा-भाग

भाजपा की चुनावी रणनीति में पसमांदा मुस्लिम हमेशा से रहे हैं। देखा जाए तो आंकड़ों के हिसाब से यह वोट बैंक लोकसभा की सौ से अधिक सीटों पर अपना प्रभाव रखता है। बीजेपी ने आगामी लोकसभा चुनाव के लिए अपनी तैयारियां शुरू कर दी है। हाल ही में इसकी एक झलक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से हैदराबाद में बीजेपी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में पसमांदा मुस्लिमों का नाम लेते हुए दिखाई दी। बैठक में मोदी ने कहा था- पार्टी को 'सन्ह यात्राओं' के जरिए 'पसमांदा मुसलमानों' का समर्थन हासिल करना चाहिए। इस बयान के बाद राजनीति के गलियारों में नए-नए समीकरणों पर चर्चा शुरू हो गई है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पीएम मोदी भारतीय राजनीति के सबसे बड़े ट्रेंड सेटर रहे हैं और उन्होंने एक सोची-समझी रणनीति के तहत पसमांदा मुस्लिमों का जिक्र किया है। पीएम मोदी की हर बात का राजनीतिक मतलब निकाला जाना लाजमी है और इस बात की संभावना प्रबल है कि यह संकेत आगामी लोकसभा चुनाव के लिए रोडमैप हो सकता है। यह पहली बार नहीं है कि पीएम मोदी ने पसमांदा का जिक्र किया हो। इससे पहले भी उन्होंने कहा था कि पसमांदा वर्ग बीजेपी के साथ है। उनके बयान के बाद से ही पार्टी नेताओं के बयान आने शुरू हो चुके हैं कि बीजेपी, मुस्लिम समुदाय के आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग पसमांदा को लोक कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ने की कोशिश करेगी। बीजेपी की अल्पसंख्यक शाखा ने पसमांदा मुसलमानों तक पहुंचने का खाका भी तैयार कर लिया है। पार्टी नेताओं के हिसाब से इसके लिए दो सूत्री योजना बनाई गई है। पहली योजना के तहत, केंद्र सरकार की सभी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ समुदाय के निचले पायदान तक पहुंचाया जाएगा और दूसरी योजना के तहत, जिन जगहों पर पार्टी बहुमत में है उन्हें पार्टी इकाइयों में जगह दी जाएगी। इसके अलावा, पार्टी ने पसमांदा समुदाय से आने वाले परमवीर चक्र विजेता वीर अब्दुल हमीद को सम्मानित करने और उनकी जयंती पर समारोह आयोजित करने की भी योजना बनाई है। ऑल इंडिया पसमांदा मुस्लिम समाज के यूपी अध्यक्ष वसीम राईन ने कहा है कि आजादी के बाद पीएम मोदी पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने पसमांदा समाज के लिए कुछ बोला है। इससे इस बात को और बल मिलता है। कुल मिलाकर कोशिश यही है कि जितनी जल्दी हो सके इस समुदाय तक पहुंच बना ली जाए। कौन हैं पसमांदा मुस्लिम पसमांदा शब्द उर्दू-फारसी का है, जिसका अर्थ होता है पीछे छूटे या नीचे धकेल दिए गए लोग। भारत में रहने वाले मुस्लिमों में करीब 15 फीसदी उच्च वर्ग से माने जाते हैं जिन्हें अशरफ कहा जाता है जबकि बचे करीब 85 फीसदी को दलित और वंचित माना जाता है और इन्हें पसमांदा कहा जाता है।हालांकि, कुछ जानकारों का मानना है कि पसमांदा सिर्फ एक राजनीतिक नाम है और आधिकारिक तौर पर इसका कोई लेना-देना नहीं है। मुस्लिम समाज में इनकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है और वे आर्थिक, सामाजिक, और शैक्षणिक रूप से पिछड़े हैं. ज्यादातर पसमांदा ओबीसी के अंतर्गत ही आते हैं और वे अपने समुदाय के भीतर ही एक सामाजिक लड़ाई लड़ रहे हैं। इसे लेकर आंदोलन भी हो चुके हैं।कांशीराम ने कहा था- मुसलमानों के 50 नेताओं से मैं मिला। इनमें भी ब्राह्मणवाद देखकर मैं दंग रह गया। इस्लाम तो बराबरी और अन्याय के खिलाफ लड़ना सिखाता है, लेकिन मुसलमानों का नेतृत्व शेख, सय्यद, मुग़ल, पठान यानी अपने को ऊंची जाति को मानने वाले लोगों के हाथ में है। वह यह नहीं चाहते कि अंसारी, धुनिया, कुरैशी उनकी बराबरी में आएंठ! वहीं, डॉ राममनोहर लोहिया के अनुसार- भारत के राजनीतिकों ने अब तक देश के सही मायनों मे पीड़ित अल्पसंख्यक, यानी कि हिंदू तथा मुस्लिमों की अनगिनत पिछड़ी जातियों के हितों की रक्षा करने की चिंता नहीं की। उन्होंने शक्तिशालियों का अल्पसंख्यक के नाम पर हितसाधन किया है। अशरफ को राजनीति के साथ-साथ सामाजिक और प्रशासन में उच्चतर स्थान मिला लेकिन पसमांदा मुस्लिमों को प्रशासन राजनीति में प्रतिनिधित्व न के बराबर रहा। समुदाय के लोगों का मानना है कि सिर्फ नौकरियों में भागीदारी की बात नहीं है, बल्कि मुस्लिम समुदाय के संगठनों - जैसे ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, जमीअत-उलेमा-ए-हिंद में भी उच्च वर्ग के मुसलमान ऊंचे पदों पर बैठे हुए हैं और पसमांदा समुदाय के लोगों का इस्तेमाल सिर्फ शक्ति प्रदर्शनों के लिए होता है।

आर्थिक चुनौतियों से लड़ने की सही नीति आम लोगों को राहत देने की आसान होती राह

इस समय जब पूरी दुनिया रूस-यूक्रेन युद्ध, चीन-ताइवान तनाव और आपूर्ति श्रृंखला में अवरोधों की वजह से आर्थिक-वित्तीय चुनौतियों और बढ़ती महंगाई से त्रस्त है, तब भारत में अपनाई गईं विवेकपूर्ण आर्थिक रणनीतियों से आम आदमी को राहत मिलती दिखाई दे रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध पर पश्चिमी देशों के दबाव के बावजूद भारत ने जिस तरह तटस्थ रुख अपनाया, उसके कारण भारत इस समय रूस से पर्याप्त छूट और रियायतों पर सस्ता कच्चा तेल प्राप्त कर रहा है। तीन वर्ष पूर्व भारत ने एक्ट फार ईस्ट नीति की जो घोषणा की थी, उसी का नतीजा है कि भारत-रूस से रियायती दरों पर कच्चा तेल प्राप्त कर रहा है। उल्लेखनीय है कि चालू वित्त वर्ष 2022-23 की पहली तिमाही अप्रैल से जून के बीच तेल के कुल आयात में रूस की हिस्सेदारी पिछले वर्ष की इसी अवधि के 2.02 प्रतिशत से बढ़कर करीब 12.9 प्रतिशत हो गई है, जबकि अमेरिका की हिस्सेदारी पिछले वर्ष की इसी अवधि के 9.2 प्रतिशत से घटकर 5.4 प्रतिशत रह गई है। इस समय भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा कच्चा तेल आयातक और उपभोक्ता देश है। यह भी महत्वपूर्ण है कि जब से भारत ने पर्याप्त छूट के साथ रूस से कच्चे तेल का आयात शुरू किया है, तब से भारत को इराक द्वारा भी कच्चे तेल की आपूर्ति में बड़ी छूट की पेशकश की जा रही है। जिस प्रकार रूस से प्राप्त सस्ते कच्चे तेल के कारण भारत में महंगाई पर नियंत्रण करना आसान हुआ है, उसी तरह रिजर्व बैंक द्वारा उठाए गए रणनीतिक कदम भी आर्थिक चिंताओं के मोर्चे पर देश के लिए राहतकारी साबित हुए हैं। वस्तुतः महंगाई पर नियंत्रण के लिए रिजर्व बैंक नरम मौद्रिक नीति से पीछे हटकर नीतिगत ब्याज दरों में वृद्धि की रणनीति पर आगे बढ़ा है। रिजर्व बैंक बाजार से तरलता खींच रहा है। इसके अनुकूल परिणाम भी दिखाई दे रहे हैं। अगस्त में खुदरा महंगाई दर सात प्रतिशत के स्तर पर रही। इसी तरह थोक महंगाई दर अगस्त में

12.41 प्रतिशत रही, जबकि जुलाई माह में 13.93 प्रतिशत थी। देश में पेट्रोल और डीजल में एथनाल का मिश्रण बढ़ाकर भी ईंधन की कीमतों में कमी लाने का प्रयास सफल हुआ है। 2014 में पेट्रोल में एथनाल मिश्रण बमुश्किल 1.4 प्रतिशत होता था, जबकि इस वर्ष 10.6 प्रतिशत एथनाल मिश्रण किया जा रहा है, जो लक्ष्य से कहीं ज्यादा है। 2025 तक पेट्रोल में एथनाल मिश्रण का लक्ष्य 20 प्रतिशत रखा गया है। यही वजह है कि एथनाल के उपयोग में तेल विपणन कंपनियों की दिलचस्पी बढ़ती जा रही है। आठ वर्ष पहले देश में 40 करोड़ लीटर एथनाल का उत्पादन होता था, अब करीब 400 करोड़ लीटर एथनाल का उत्पादन हो रहा है। इस समय वैश्विक आर्थिक चुनौतियों के बीच देश की आर्थिक रणनीति का एक अहम पड़ाव आरबीआइ द्वारा भारत के साथ डालर के संकट का सामना कर रहे रूस, इंडोनेशिया, श्रीलंका, ईरान के अलावा एशिया और अफ्रीका के कई देशों के बीच व्यापारिक सौदों का निपटान रुपये में किए जाने संबंधी महत्वपूर्ण निणय्य भी है। इस परिप्रेक्षय में उल्लेखनीय है कि भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय कारोबार को अगले कुछ ही दिनों में एक-दूसरे की मुद्राओं में किए जाने की संभावना है। इसी तरह भारत अन्य देशों के साथ भी एक-दूसरे की मुद्राओं में भुगतान की व्यवस्था सुनिश्चित करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इससे रुपये को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लेनदेन के लिए अहम मुद्रा बनाने में मदद मिलेगी। इससे जहां व्यापार घाटा कम होगा, वहीं विदेशी मुद्रा भंडार घटने की चिंता भी कम होगी। इस वक्त वैश्विक आर्थिक एवं वित्तीय चुनौतियों तथा वैश्विक मांग में शिथिलता के बीच भारत में सरकार द्वारा अपनाई गईं आर्थिक रणनीतियां आम आदमी और अर्थव्यवस्था के लिए राहतकारी सिद्ध हुई है, लेकिन अभी भी खादय वस्तुओं की उच्च महंगाई दर देश के लिए एक चुनौती बनी हुई है। ऐसे में खुदरा महंगाई में तत्परता से और अधिक कमी लाने की जरूरत है। खुदरा महंगाई को नियंत्रित कर इस वर्ष छह प्रतिशत और आगामी दो वर्षों में चार प्रतिशत तक लाने के लिए रेपो रेट में कुछ और वृद्धि करके अर्थव्यवस्था में नकदी प्रवाह को कम किया जाना उपयुक्त होगा। देश में अब कच्चे तेल के अधिक उत्पादन एवं कच्चे तेल के विकल्पों पर भी ध्यान देना होगा। इलेक्ट्रिक वाहनों के साथ-साथ अन्य हाइब्रिड वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहन देना होगा। इलेक्ट्रिक कारों की तरह हाइब्रिड कारों पर भी जीएसटी घटाना लाभप्रद होगा। पेट्रोल-डीजल आधारित वाहनों के उपयोग को हतोत्साहित करते हुए ग्रीन ईंधन वाले वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित करना होगा। अभी रूस से कच्चे तेल के आयात में और वृद्धि की जरूरत है। यह भी जरूरी है कि घरेलू उत्पादन वृद्धि और स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन देने के साथ आत्मनिर्भर भारत अभियान को तेजी से आगे बढ़ाकर व्यापार घाटे में कमी की जाए। चूंकि अब कई देशों के साथ कुछ ही समय में व्यापार रुपये में होने लगेगा, अतः अभी जिस तरह डालर या यूरो में निर्यात करने वाले व्यापारियों को कमाई पर सरकार की तरफ से कर छूट दी जाती है, वैसी ही छूट रुपये में निर्यात करने वालों को भी देनी चाहिए। ऐसी स्कीम बनाई जानी चाहिए, जिससे रुपये में वैश्विक कारोबार पर कर छूट मिले। इससे व्यापार घाटे में कमी आएगी। इन उपायों को अपनाकर देश वैश्विक आर्थिक-वित्तीय चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकेगा और देश के करोड़ों लोगों को और अधिक राहत दी जा सकेगी।

चीन-ताइवान-अफगानिस्तान में दिखा कुदरत का कहर

सितंबर में कब-कब कांपी धरती!नई दिल्ली, आनलाइन डेस्क। चीन, ताइवान, इंडोनेशिया और अफगानिस्तान समेत कई देश ऐसे हैं, जहां सितंबर माह के दौरान भूकंप ने भयानक तबाही मचाई। पिछले कुछ दिनों में दुनिया भर के अलग-अलग देशों में भूकंप के जोरदार झटके महसूस किए गए। जिससे जानमाल का काफी नुकसान हुआ। इस भूकंप का सबसे ज्यादा असर चीन के सिचुआन प्रांत और ताइवान में देखने को मिला। चीन में भूकंप से मरने वालों का आंकड़ा 90 के पार पहुंच गया।

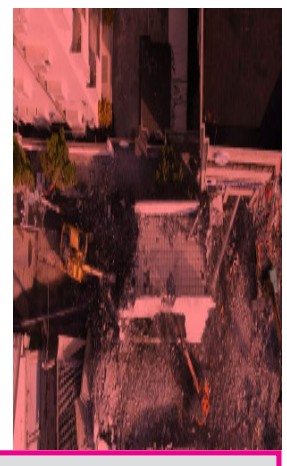

नियंत्रण से बाहर विदेशी तकनीकी कंपनियां, कैसे तय होगी इनकी जवाबदेही

एक ऐसे समय जब यूरोप, आस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया और यहां तक कि अमेरिका में भी बड़ी टेक कंपनियों की मनमानी और उनके एकाधिकार पर लगाम लगाने के लिए एक के बाद एक कदम उठाए जा रहे हैं, तब भी भारत में ऐसा होता नहीं दिख रहा है। हालांकि इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय और भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग गूगल, फेसबुक समेत बड़ी टेक कंपनियों के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार एवं गैर प्रतिस्पर्धी व्यवहार के खिलाफ कदम उठाने पर काम कर रहा है, लेकिन अभी तक किसी ठोस नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सका है। ऐसा किया जाना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि ये कंपनियां भारतीय कानूनों के तहत काम करने के लिए तैयार नहीं दिखतीं। हाल में एक मामले में ट्विटर ने भारत सरकार के विरुद्ध कर्नाटक हाईकोर्ट का रुख किया और वहां यह दलील दी कि सरकार जो ट्वीट्स हटाने के लिए कह रही है, उससे संविधानप्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन होगा। इसके पहले एक अन्य मामले में दिल्ली हाईकोर्ट में ट्विटर ने बड़ा सुविधाजनक रवैया अपनाया। इस मामले में याचिकाकर्ता द्वारा हिंदू देवी-देवताओं से जुड़े अपमानजनक ट्वीट्स हटाने की मांग पर ट्विटर ने तर्क दिया कि उन्हें तभी हटाया जा सकता है जब संबंधित सरकारी एजेंसियों को लगे कि वे हटाए जाने योग्य हैं। प्रशन है कि भारतीय कानूनों के उल्लंघन पर ऐसी कंपनियों के विरुद्ध क्या कार्रवाई की जा रही है? सीधे शब्दों में कहें तो विदेशी बिग टेक कंपनियां हर तरह से मनमानी पर उतारू हैं। इसका एक कारण यह भी है कि भारत में इन कंपनियों की जवाबदेही सिर्फ इंटरनेट बिचौलिये होने तक सीमित है।विदेशी टेक कंपनियों द्वारा इकट्ठा किए जाने वाले करोड़ों भारतीयों के डाटा की सुरक्षा के लिए भी अभी तक देश में कोई सख्त कानून नहीं बना। डाटा सुरक्षा बिल की बात वर्षों से हो रही है, किंतु वह अटका हुआ है। वहीं टेक कंपनियां भारतीय यूजर्स का डाटा बाहर भेज रही हैं। इसका हमारे समाज पर क्या प्रभाव पड़ सकता है, इसकी किसी को परवाह ही नहीं है। दुनिया का कोई बड़ा देश ऐसा नहीं होने देता। वहां सरकारें डाटा सुरक्षा के नाम पर इन कंपनियों को अनुशासित रखती हैं। डाटा सुरक्षा कानूनों के जरिये पश्चिमी देश इन कंपनियों की कमजोर नस पर हाथ रखे रहते हैं और कंपनियों की डाटा सुरक्षा ही क्या, अन्य किसी मामले में भी सरकारी आदेशों के उल्लंघन की हिम्मत नहीं होती।बीते दिनों आयरलैंड ने यूरोपीय डाटा एवं निजता नियमों के उल्लंघन मामले में इंस्टाग्राम पर करीब 3,100 करोड़ का हर्जाना लगाया। उसी इंस्टाग्राम पर भारत में हिंदू देवी-देवताओं को लेकर तमाम अपमानजनक पेज मिल जाएंगे। आयरिश सरकार वाट्सएप और फेसबुक पर 1.7 करोड़ यूरो का जुर्माना भी ठोक चुकी है। गत सप्ताह ही यूरोपीय संघ की अदालत ने गूगल की प्रवर्तक कंपनी अल्फाबेट पर 4.2 अरब डालर का जुर्माना लगाया। इससे पहले दक्षिण कोरिया में अल्फाबेट और फेसबुक पर संयुक्त रूप से 7.1 करोड़ डालर का हर्जाना लगाया गया था। अमेरिकी राज्य कैलिफोनिया ने भी यूरोप की तर्ज पर ऐसा कानून बनाया है। कुछ दिन पहले ही चीन ने भी निजी सुरक्षा संरक्षण कानून लागू कर दिया। उसके उल्लंघन पर कंपनी के वैश्विक राजस्व का पांच प्रतिशत तक जुर्माना लगाया जा सकता है और संबंधित कंपनी का व्यापारिक लाइसेंस भी रद किया जा सकता है। स्पष्ट है कि ऐसी सूरत में न तो कोई कंपनी इस चीनी कानून का उल्लंघन करने की हिम्मत करेगी और न ही चीनी सरकार के किसी और दिशानिर्देश की अनदेखी कर सकेगी। दिग्गज तकनीकी कंपनियां भारत के मामले में किस तरह बेलगाम हैं, इसका पता हाल में हुए एशिया कप में पाकिस्तान से मैच हारने के बाद भारतीय गेंदबाद अर्शदीप सिंह के खिलाफ कुत्सित प्रचार से चलता है। इसके जरिये ऐसा आभास कराया गया कि भारतीय प्रशंसक अर्शदीप सिंह की सिख पहचान को खालिस्तान से जोड़कर उन्हें निशाना बना रहे हैं, लेकिन जब पड़ताल हुई तो ऐसा करने वाले मुख्य रूप से पाकिस्तानी निकले। इससे पहले मोहम्मद शमी के मामले में भी ऐसा ही किया गया था। भाजपा से निष्कासित नेता नुपुर शर्मा के बयान के बाद पाकिस्तान और खाड़ी देशों से भी इंटरनेट मीडिया पर भारत विरोधी ट्रेंड चलाया गया था। इसमें स्वयंभू फैक्ट-चेकर मोहम्मद जुबैर का हाथ था। जुबैर और उनके जैसे लोगों ने ही यह प्रचारित किया कि कैसे हिंदू समुदाय एक सिख अर्शदीप के खिलाफ घृणास्पद अभियान चला रहा है। नुपुर शर्मा मामले ने भी यही बताया था कि खाड़ी देशों और पाकिस्तान से चलाए गए इंटरनेट मीडिया ट्रेंड स्वतःस्फूर्त नहीं, बल्कि एक साजिश का हिस्सा थे। स्पष्ट है कि भारत विरोधी ये तत्व किसी भी बेसिर-पैर के मुद्दे को हवा देकर देश को अस्थिर करने की कोशिश करते रहेंगे और उनसे लड़ने में पारंपरिक राजनीतिक एवं प्रशासनिक तरीके कारगर नहीं होंगे। उनसे निपटने के लिए भारत को भी वालंटियर इंटरनेट मीडिया तंत्र खड़ा करना होगा, जो पाकिस्तान जैसे देशों में हो रही उथल-पुथल का लाभ उठाकर उसके विरुद्ध जवाबी सूचना युद्ध छेड़ सके। ध्यान रहे कि अर्शदीप मामले में पाकिस्तानी साजिश को किसी सरकारी एजेंसी ने नहीं, अपितु सजग इंटरनेट मीडिया यूजर्स ने बेनकाब किया। इसके बाद ही सरकार ने विकिपीडिया के अधिकारियों को तलब कर अर्शदीप से जुड़ी गलत जानकारी हटाने को कहा। चूंकि मामला अंतरराष्ट्रीय बन गया था तो इतनी कार्रवाई हुई, लेकिन आंतरिक मोर्चे पर भी भारत की सुरक्षा एवं स्थिरता के लिए ऐसे तमाम खतरे पैदा किए जा रहे हैं, जिन्हें लेकर या तो सरकारें राजनीतिक कारणों से उदासीन रहती हैं या फिर लापरवाही के चलते अनभिज्ञ। जैसे ज्ञानवापी परिसर में हिंदू पक्ष द्वारा आदि विश्वेश्वर शिवलिंग मिलने का दावा किया गया तो इंटरनेट मीडिया पर शिवलिंग से जुड़ीं ऐसी तमाम पोस्ट की गईं, जो बहुत अपमानजनक थीं। इक्का-दुक्का मामलों को छोड़कर किसी पर कोई कानूनी कार्रवाई नहीं हुई। अर्शदीप प्रकरण में विकिपीडिया ने भले ही आपत्तिजनक सामग्री हटा दी, परंतु ऐसे मामलों में बिग टेक कंपनियां अमूमन सरकारी आदेशों और भारतीय कानूनों का मखौल ही उड़ाती हैं।

सिविल सेवा परीक्षा पर उठते प्रश्न, प्रारंभिक परीक्षा की गुणवत्ता की पहेली सुलझाने का समय

इन दिनों संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की ओर से आयोजित की जाने वाली सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा हो रही है। यह 25 सितंबर तक चलने वाली है। यह परीक्षा तीन चरणों में होती है- प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार। इस अवसर पर यह स्मरण रखना आवश्यक है कि पिछले वर्ष की प्रारंभिक परीक्षा का कट आफ मार्क्स 43.77 प्रतिशत रहा था। ध्यान देने की बात यह है कि 2016 में यह 58 प्रतिशत था, जो क्रमशः गिरते-गिरते इस दयनीय दशा को प्राप्त कर चुका है। इस वर्ष इसमें और भी गिरावट आने की आशंका है। पांच जून को हुई प्रारंभिक परीक्षा यदि सामान्य रूप से हुई होती तो कोई बात नहीं थी, लेकिन इस बार की परीक्षा में जिस तरह के अनसुने, अनजाने और अनपढ़े प्रशनें का ढेर लगा दिया गया, उसने परीक्षार्थियों को बेहद निराश किया। पूछे गए प्रशनें को देखकर इन्हें समझ में ही नहीं आ रहा था कि वे अगले वर्ष की तैयारी कैसे करें वे बुरी तरह भ्रमित हुए। प्रारंभिक परीक्षा के परिणाम की घोषणा से पता चला कि लगभग एक हजार पदों के लिए करीब 13 हजार उम्मीदवारों का चयन होना था, जो हुआ, लेकिन परिणाम आने के बाद अफरातफरी इस बात को लेकर मची कि बड़े-बड़े दिग्गज धराशायी हो गए। यह स्थिति प्रारंभिक परीक्षा के बारे में कुछ मूलभूत एवं अत्यंत महत्वपूर्ण प्रशन खड़े करती है। पहला और सामान्य सा प्रशन तो यही है कि क्या देश की इतनी प्रतिष्ठित उच्च स्तरीय प्रतियोगी परीक्षा का इतना कम कट आफ मार्क्स आना सम्मानजनक है? यह हास्यास्पद बात है कि इसी परीक्षा के सामान्य अध्ययन के द्वितीय प्रशन-पत्र को मात्र क्वालीफाई करना पड़ता है, जो सीसैट के नाम से अधिक जाना जाता है और ऐसा करने के लिए 33 प्रतिशत अंक की जरूरत होती है। दूसरे प्रशन के रूप में यह बात आती है कि क्या यह गिरावट इस परीक्षा में बैठने

वाले युवाओं के गिरते हुए शैक्षणिक एवं प्रतिभा के स्तर के कारण है? यदि ऐसा है, तब तो यह अत्यंत चिंताजनक है। कोई भी राष्ट्र चाहेगा कि उसके सर्वोच्च स्तरीय प्रशासन में देश की अच्छी से अच्छी प्रतिभाएं आएं। इसलिए इन सेवाओं को इतना आकर्षक एवं प्रतिष्ठापूर्ण बनाया जाता है। यदि हम ऐसा नहीं कर पा रहे हैं तो हमें अपनी प्रणाली पर पूरी गंभीरता से विचार करना होगा, लेकिन एक अच्छी बात यह है कि ऐसा है नहीं। इसके प्रमाण के तौर पर मुख्य परीक्षा के कट आफ मार्क्स को देखा जा सकता है, जिसे प्रतिभा का संपूर्ण एवं वास्तविक परीक्षण करने वाली परीक्षा माना जाता है। 2016 में साक्षात्कार में जाने के लिए न्यूनतम 787 अंकों की जरूरत थी। यह पिछले वर्ष की परीक्षा में 745 (कुल अंक 1750) रही। 2016 में साक्षात्कार के अंकों को जोड़ने के बाद चयन के लिए न्यूनतम अंक थे-988, जो पिछले साल 944 रहे। साक्षात्कार 275 अंकों का होता है। ये आंकड़े बताते हैं कि यदि प्रतिभा में गिरावट आई होती तो उसका प्रभाव मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार, इन दोनों पर पड़ता। आखिर प्रारंभिक परीक्षा के अंकों में इतनी कमी क्यों है इसका उत्तर बहुत साफ है और वह यह कि पिछले कुछ वर्षों से सामान्य अध्ययन के रूप में जिस तरह के उलटे-पुलटे और कठिन प्रशन पूछे जा रहे हैं, वे सामान्य न होकर विशेष से भी विशेष हो गए हैं। उदाहरण के रूप में इस वर्ष 2018 में अफ्रीका की एक शरणार्थी बस्ती बीडीबीडी के बारे में पूछा गया। जिन चार ग्रंथों में से जैन ग्रंथों का चयन करना था, उनके नाम थे- नेत्तिपकरण, परिशिष्टपर्वन, अवदानशतक और त्रिशिष्टलक्षण महापुराण। चाड, गिनी, लेबनान और ट्यूनीशिया की घटनाओं पर प्रशन था। मध्यकालीन भारत से एक प्रशन था कि कौन कुलाह-दान कहलाते हैं? चाय बोर्ड के विदेश में कहां-कहां कार्यालय हैं? प्रभाजी कक्षीय बमबारी प्रणाली क्या है? ऐसे अनेक प्रशन हैं। यह पाया गया है कि इस बार के कुल सौ प्रशनें में लगभग 55 प्रशन अत्यंत कठिन श्रेणी के हैं। बहुत से प्रशन तो ऐसे हैं कि उनके उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों के समूहों से भी सही उत्तर तक पहुंचने का कोई सूत्र नहीं मिलता। अधिकांश पूछे गए तथ्य भी ऐसे होते हैं कि उनका ज्ञान या सिविल सेवा के करियर से कोई संबद्धता नहीं होती। प्रारंभिक परीक्षा के साथ एक दिक्कत यह भी है कि न तो इसका पाठ्यक्रम बहुत स्पष्ट है, और न ही इसके ज्ञान का स्तर। हालांकि यूपीएससी ने मुख्य परीक्षा के लिए इन दोनों का स्पष्ट प्रविधान किया हुआ है, लेकिन इस प्रारंभिक परीक्षा के लिए नहीं। यदि हम व्यावहारिक रूप में मुख्य परीक्षा के निर्देशों को प्रारंभिक परीक्षा के लिए मानकर चलें तो फिलहाल वह सुसंगत नहीं दिख रहा है। मुख्य परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रशनें के बारे में आयोग ने कहा है कि 'प्रशन ऐसे होंगे कि कोई भी सुशिक्षित व्यक्ति बिना किसी विशेष अध्ययन के इनका उत्तर दे सके।'

संक्षिप्त समाचार

शशि थरूर लड़ सकते हैं कांग्रेस अध्यक्ष पद का चुनाव, सोनिया गांधी ने भरी हामी

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर ने सोमवार को पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी से उनके आवास पर मुलाकात की। इस बारे में उन्होंने तो कोई जानकारी नहीं दी, लेकिन सूत्रों का कहना है कि उन्हें सोनिया से पार्टी अध्यक्ष पद के आगामी चुनाव में उतरने की मंजूरी मिल गई है। अगले कुछ दिनों में वह अपनी उम्मीदवारी की घोषणा कर सकते हैं। सूत्रों का कहना है कि इस बैठक के बाद सोनिया गांधी ने

थरूर को चुनाव लड़ने की मंजूरी प्रदान की और कहा कि थरूर पार्टी के आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत बना सकते हैं। वहीं इस मुद्दे पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने कहा- जो कोई भी (कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए) चुनाव लड़ना चाहता है, वह स्वतंत्र है। इस चुनाव में भाग लेने के लिए सभी सदस्यों का स्वागत है। सोनिया और राहुल गांधी भी लगातार पार्टी के भीतर लोकतंत्र को मजबूत करने की हिमायत करते रहे हैं। कांग्रेस अध्यक्ष पद का चुनाव एक खुली, लोकतांत्रिक और पारदर्शी प्रक्रिया है। वैसे इस चुनाव को लड़ने के लिए किसी को किसी की अनुमति की जरूरत नहीं है सूत्रों ने बताया कि सोनिया के साथ मुलाकात के दौरान थरूर ने पार्टी अध्यक्ष पद के लिए 17 अक्टूबर को होने वाले चुनाव में उतरने की इच्छा जताई ताकि पार्टी के आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत बनाया जा सके।

'मिशन गुजरात' पर जेपी नड्डा, भाजपा के लिए तैयार करेंगे सियासी पिच

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा मंगलवार से गुजरात के दो दिवसीय दौरे पर जाएंगे। इस दौरान उनके व्यस्त कार्यक्रम में रोड शो और पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ बैठकें शामिल हैं। नड्डा किसानों के साथ एक बैठक में भाग लेंगे और पार्टी के उन जनप्रतिनिधियों से मिलेंगे, जिन्होंने पिछले विधानसभा चुनावों के बाद से राज्य में विभिन्न चुनाव जीते हैं। अपनी यात्रा के पहले दिन, नड्डा मोरबी शहर में एक मेगा रोड शो में भाग लेंगे। वहीं, अपने दौरे के दूसरे दिन वे गांधीनगर में राज्य पार्टी मुख्यालय में संगठनात्मक बैठक करेंगे। उन्हें इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनावों की तैयारियों के बारे में राज्य पार्टी नेतृत्व द्वारा एक विस्तृत रिपोर्ट कार्ड दिया जाएगा। नड्डा अपनी यात्रा के दूसरे दिन एक प्रोफेसर शिखर सम्मेलन को भी संबोधित करेंगे जिसमें वह देश के लिए भाजपा के दृष्टिकोण और शिक्षा के क्षेत्र में नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा किए गए योगदान के बारे में बात करने के लिए विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के प्रोफेसरों और शिक्षकों को संबोधित करेंगे।

आदर्श आगनवाणी का कार्यक्रम गढी चौखंडी मे भाजपा महिला मोर्चा मंडल द्वारा किया गया

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। भाजपा महिला मोर्चा नोएडा महानगर मे आदर्श आंगनवाड़ी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम मे राष्ट्रीय महिला मोर्चा की अध्यक्ष एवम् उत्तर प्रदेश और वृक्षारोपण का महत्वसाथ ही वर्षा कौशिक ने सभी आंगनवाड़ी को हम कैसे सुंदर और स्वच्छ बनाये इसपर जोर दिया और सभी महिला मोर्चा टीम का मार्गदर्शन किया। यह कार्यक्रम स्वच्छ का सृजन किया है। जिससे समाज की महिलाऐ अपना और समाज को आगे ले जाने मे सहायक सिद्ध होगी।सम्पूर्ण कार्यक्रम की जिम्मेदारी और व्यवस्था कृष्णा मंडल की प्रभारी एवम् संयोजिका श्रीमती

प्रभारी श्रीमती रेखा गुप्ता ,क्षेत्रिय उपाध्यक्ष (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) श्रीमती वर्षा कौशिक ,सोशल मिडिया प्रमुख (उत्तर प्रदेश) श्रीमती सुचित्रा पाठक , क्षेत्रीय उपाध्यक्ष मोनिका पंडिता ,क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अल्पना चौहान,क्षेत्रीय कार्यालय प्रभारी रचना जैन एवम् सदस्य श्रीमती संतोष की गरिमामई उपस्थिति रही। यह कार्यक्रम नोएडा भाजपा महिला मोर्चा अध्यक्ष श्रीमती शारदा चतुर्वेदी की अध्यक्षता मे आरम्भ हुआ।आदर्श आंगनबाड़ी कार्यक्रम के अंतर्गत रेखा गुप्ता ने निमन बिंदुओ पर आपना सुन्दर उदबोधन दिया 1जल ही जीवन,2स्वच्छता का महत्व,3 वृक्ष आंगनवाड़ी नोएडा के कृष्णा मंडल मे आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम से समाज की महिलाओं के उत्थान एवं उन्हें अपनी जिन्दगी को और बेहतर कैसे बना सकती है इस बिन्दु पर जोर दिया गया। और महिलाओं को आश्वस्त किया गया कि आप समाज का अभिन्न हिस्सा है। बिना आपके समाज का सर्वागीण विकास संभव नहीं हो सकता है इसलिए आपको बाहर निकलना पड़ेगा और समाज को एक नयी दिशा और दशा देनी होगी। इस काम को आप महिलाऐ ही कर सकती है। हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी आप सभी के समुचित विकास हेतु कयी योजनाओं सोनिका अत्रि द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे सभी ज़िला पदाधिकारी और मंडल की बहनो का सहयोग रहा इस कार्यक्रम मे भाजपा महानगर अध्यक्ष मनोज गुप्ता, महामंत्री उमेश त्यागी एवम् गणेश जाधव का भी सहयोग रहा।कार्यक्रम मे भाजपा महिला मोर्चा ,नोएडा की महामंत्री मधुमेहरा,शिवानी शरद,रेनू बाला दीपाली दीक्षित,राजश्री गुप्ता मीडिया प्रभारी नीता वाजपेई ,रेखा सिंह, आरती जैन, शारदा पुष्प, भारती नेगी,खुशबू चौहान ,उषा किशोर,सुनीता शुक्ला, पूजा अवाना,उमा मिश्रा,आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

जूडिशियल कॉउन्सिल ने ग्रीन इंडिया दिवस में किया वृहद वृक्षारोपण

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। ग्रीन इंडिया दिवस 18 सितंबर को हर वर्ष मनाया जाता है , ग्रीन इंडिया दिवस को देशभर में बड़े लगाना समझदारी होगी । श्री अगिन्होत्री ने कहा जिस तेजी से वन कम हो रहे हैं वह दिन दूर नहीं जब हम इनको सिर्फ किताबों में पढ़ेंगे श्री अगिन्होत्री के मुताबिक, के तरीकों में बदलाव, हिमखण्डों और ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि और वनस्पति तथा जन्तु जगत पर प्रभावों के रूप के सामने आ सकते हैं। यह

उत्साह के साथ मनाया गया, इसमें जुडिशल काउंसिल संस्था के विभिनन पदाधिकारियों ने आम जनता के साथ मिलकर अपने-अपने शहरों में बड़ी संख्या में वृक्ष लगाएं साथ ही यह प्रतिज्ञा भी की कि इन वृक्षों को फलने- फूलने तक उनकी सुरक्षा की जाएगी । देश के विभिन्न हिस्सों में वृक्षारोपण किया गया राजधानी दिल्ली में दिवंगतों की याद में अशोक नीम तथा अनार के पेड़ लगाये गए ,दिल्ली के अलावा कानपुर , लखनऊ, फतेहपुर, हैदराबाद, अमृतसर , भोपाल , ग्वालियर, वेल्लोर इत्यादि में बड़ी संख्या में पेड़ लगाए गए । मानवाधिकारों के संरक्षण तथा उनके हित में लगातार कार्यरत जूडिशियल कॉउन्सिल के डायरेक्टर जनरल श्री राजीव अगिन्होत्री नें कहा जंगलों तथा वृक्षों को कटने से बचाना होगा जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी ज्यादा से ज्यादा पेड़ों की जीओ टैगिंग करनी होगी । मौजूदा परिस्तिथयों का पूर्व अनुमान घटते पेड़ों के आंकड़े डराने वाले हैं । न्यूज़ वार्ता संवादाता से बातचीत के दौरान श्री अगिन्होत्री नें बताया ग्लोबल वार्मिंग दुनिया की जटिल समस्या है, यह बात साधारण आदमी समझ नहीं पाता है। उसे ये शब्द टेकिन्कल लगता है। इसलिये वह इसकी तह तक नहीं जाता । लिहाजा इसे एक वैज्ञानिक परिभाषा मानकर छोड़ दिया जाता है। ज्यादातर लोगों को लगता है कि फिलहाल संसार को इससे कोई खतरा नहीं है। आसान शब्दों में समझें तो ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है 'पृथ्वी के तापमान में वृद्धि और इसके कारण मौसम में होने वाले परिवर्तन' पृथ्वी के तापमान में हो रही इस वृद्धि (जिसे 100 सालों के औसत तापमान पर 10 फारेनहाईट आँका गया है) के परिणाम स्वरूप बारिश बहुत ही ज्यादा चिंता का विषय है आर्कटिक तीन गुना गर्म हो रहा है इनपे नियंत्रण पाया जा सकता है यदि हम सब इसको कम करने का प्रण लें । लगातार पेड़ो की कम होती संख्या भी गहन चिंता का विषय है जिस तरह का मंजर है सरकार को अपनी नीतियों पर तुरंत पुनर्विचार करना चाहिए और पेड़ काटने की सज़ा कठोर से कठोर करे । श्री संजय मेंबर पब्लिक ग्रीवांस कमिटी नें कहा ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते खतरे को दर्शाने वाले साक्ष्य पहले से तकरीबन दोगुने हो चुके हैं। आधुनिकरण के नाम पर पेड़ों का काटा जाना बहुत ही अफ़सोसजनक शर्मनाक और शर्मशार करनेवाला है । इसका जो असर पर्यावरण पर हो रहा है, उससे सबको गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है और यदि इसे रोका नहीं गया तो जलवायु परिवर्तन से उपजे खाद्य संकट से उबरना कठिन हो जाएगा।

कांग्रेस नेता रामनिवास उरमलिया का आरोप गरीबों की रोजी रोटी छीन कर प्रशासन ने किया पक्षपात

(आधुनिक समाचार सेवा)
मैहर। प्रशासन द्वारा गत दिनों शारदा देवी परिसर से हटाए गए अतिक्रमण में अमीरों और रसूखदारों के नाम शामिल नहीं थे ,क्योंकि कानून का डंडा केवल गरीब की पीठ और पेट पर चलता है ।अमीर तो राजनीतिक पकड़ रखते हैं और प्रशासन उनके इशारे पर नाचता है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रामनिवास उरमलिया ने इस संबंध में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि अंधा बांटे रेवड़ी फिर फिर अपने अपनों को देय ठवाली कहावत चरितार्थ करते हुए प्रशासन ने मैहर के चंद साजिशकर्ता नेताओं के इशारे पर गरीबों का कारोबार बंद कराया है, जो दुःखद और निंदनीय होने के साथ ही आंदोलन का महत्वपूर्ण विषय बन गया है। मेला के समय दर्शनार्थियों के आने-जाने मे असुविधा की आड़ लेकर हटाया गया उक्त अतिक्रमण दुर्भाग्यपूर्ण है जिसमें पक्षपात की बू आती है। ऐसे परिसरों में अतिक्रमण की शुरुआत ही रसूखदारो से शुरू

होती है जिनकी राजनीतिक पकड़ होती है। आशियाने से लेकर फुटपाथ तक अतिक्रमण का बाजार बसाने में इन्हीं का हाथ होता है और अतिक्रमण कराना इनकी कमाई का जरिया भी होता है।गरीबों से रुपए लेकर अतिक्रमण कराते हैं तथा उन्हीं की आड़ में अपना भी कारोबार स्थापित कर खुद तो दूध के धुले बन जाते हैं और गरीबों पर कहर बरपाते हुए उन्हें नेस्तनाबूद करा रहे हैं।आज जबकि मेले का समय है फुटपाथी व्यापारी गरीब भाई बहनों को अपना परिवार चलाने के लिए दो पैसे की आश थी तब ऐन वक्त पर उनके पेट में लात मारते हुए रोजी-रोटी छीनने का कूट रचित षड्यंत्र कर दिया गया। कांग्रेस नेता ने प्रशासन को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि अतिक्रमण किए जाने की तारीख पर जब रसूखदारो के मजबूत आशियाने बन रहे थे और गरीबों से अतिक्रमण कराकर वसूली करने का खेल जारी था तब प्रशासन सक्रिय रहा होता तो वहां पर अनाधिकृत आबाद होने और कारोबार करने की गुंजाइश ही ना रहती। शारदा मंदिर परिसर में तमाम धननसेठ अतिक्रमण किए बैठे हैं उन पर भी अतिक्रमण की कार्यवाही का डंडा क्यों नहीं चला आंदोलन की चेतावनी कांग्रेस नेता श्री उरमलिया ने शासन प्रशासन से मांग की है कि बलात विस्थापित किए गए सभी गरीब प्रभावितों को मानवता के आधार पर पुनः दुकान स्थापित करने की जगह दी जाए ताकि वे आगामी नवरात्रि मेले में अपना कारोबार कर अपनी रोजी-रोटी चला सके। चूंकि मामला गरीबों की रोटी से जुड़ा हुआ है अतः समय रहते यदि गरीबों को न्याय नहीं मिलता तो आंदोलन होना तय है।

अमित शाह व जेपी नड्डा से मुलाकात कर गोवा लौटे सीएम प्रमोद सावंत

(आधुनिक समाचार सेवा)
पणजी । मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने राज्य में कैबिनेट फेरबदल को लेकर प्रतिक्रिया दी है। दिल्ली से गोवा पहुंचने के बाद मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने कहा कि अभी राज्य मंत्रिमंडल में फेरबदल की कोई योजना नहीं है। बता दें कि सीएम प्रमोद सावंत ने दिल्ली दौरे पर सोमवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात की थी। गोवा कांग्रेस छोड़कर हाल ही में भाजपा में शामिल होने वाले 8 विधायकों ने भी केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात की थी। इस मौके पर गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत भी उनके साथ मौजूद थे। हालांकि, विधायक माइकल लोबो देश से बाहर होने के कारण गृह मंत्री शाह और जेपी नड्डा से मुलाकात नहीं कर पाए। इस दौरान राज्यसभा सांसद विनय तेंदुलकर और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सदानंद तनवड़े भी मौजूद थे। हालांकि, मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत के साथ दिल्ली दौरे पर गए सभी विधायकों की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भी मुलाकात करनी थी। लेकिन उनके व्यस्त कार्यक्रम के कारण सीएम सावंत औ विधायकों को प्रधानमंत्री से मुलाकात नहीं हो पाई।

सेक्टर 71 (शिव शक्ति अपार्टमेंट) मे आर डब्ल्यू ए का चुनाव सम्पन्न हुआ

जगदीश सिंह जग्गा अध्यक्ष एवं संजय शुक्ला महासचिव चुने गए

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। शिव शक्ति अपार्टमेंट सेक्टर 71 नोएडा में आर डब्लूय ए का चुनाव सम्पनन्‍ हुआ। जिसमें 3 पैनल चुनाव मैदान मे अपनी अपनी जोर आजमाने उतरे हुए थे। इस आर डब्लूय ए के चुनाव में कुल 963 मत पड़े। जिसमें जगदीश यादव जग्गा पैनल को 320 मत प्राप्त हुआ और विजयी घोषित किये गये। एवं विजेंद्र सिंह पैनल को कुल 317 मत प्राप्त हुआ वही सुरेंद्र कुमार को कुल 316 मत प्राप्त हुआ। दस मत खारिज कर दिए गए। यह चुनाव बहुत कांटे का था।इस चुनाव में अप्रत्यक्ष रूप से कयी राजनीतिक पार्टियों की दखलंदाजी थी।लेकिन गैर राजनीतिक सहयोग के वहां की जनता ने जगदीश सिंह जग्गा पैनल को काम के आधार पर दुबारा विजयी बनाया और विजेंद्र सिंह पैनल दूसरे स्थान पर रहे वही सुरेंद्र कुमार पैनल तीसरे स्थान पर रहे यह ऐतिहासिक जीत जगदीश यादव जग्गा पैनल की रही दूसरी बार आरडब्लूए का चुनाव जीतकर जग्गा पैनल ने ऐतिहासिक जीत कायम की है सभी सेक्टर की माताएं बहने एवं भाइयों ने मिलकर जग्गा पैनल को आशीर्वाद दिया एवं सभी सेक्टर के निवासियों ने जीत होने के उपरांत जशन मनाया । जगदीश सिंह यादव पैनल ने सभी निवासियों को आश्वासन दिया है कि जो अधूरे कार्य रहे हैं उनको पूरा किया जाएगा। जगदीश यादव पैनल के सदस्य गण -जगदीश सिंह यादव जग्गा अध्यक्ष, संजय शुक्ला महासचिव, राजेश कुमार उपाध्यक्ष , नवनीत त्यागी कोषाध्यक्ष, पवन भट्ट सचिव, श्रीमती मालती सिंह प्रचार सचिव, अजय चौधरी सह कोषाध्यक्ष, अरुण कुमार संगठन सचिव चुने गए। पूरे पैनल ने सभी सेक्टरवासियो का धन्यवाद प्रकट किया ।

10 वीं अन्तराज्यीय प्रतियोगिता कराटे मे खिलाड़ियो ने दिखाया जौहर

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। वर्ल्ड वूड़ो कराटे संघ उत्तर प्रदेश द्वारा 10 वीं अन्तराज्यीय कराटे प्रतियोगिता का आयोजन 17-18, सितम्बर को सीमैक्स इन्टरनेशनल स्कूल, ग्रेटर नोएडा

में कराया गया।जिसका उद्घाटन नरेन्द्र कश्यप (मा. राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार पिछड़ा वर्ग कल्याण एव दिव्यगजन सशक्ति करण उत्तर प्रदेश सरकार), अंतरराष्ट्रीय योग गुरु योगिराज प्रेम योगी जी महाराज ने किया। प्रतियोगिता में राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगण, उत्तर प्रदेश से हाथरस मेरठ, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर, बुलन्दशहर, अलीगढ़, मथुरा, आगरा, हापुड़ के खिलाड़ियो ने भाग लिया।वर्ल्ड बूडो कराटे संघ भारत के अध्यक्ष एवं मुख्य प्रशिक्षक एम.एस. सामुराई द्वारा सभी खिलाड़ियों को खेल के विषय में जागरुक और कोई हारेगा कोई जीतेगा इस से निराश नही होना। मेहनत का फल हमेशा मिलेगा।प्रतियोगिता वर्ल्ड कराटे महासंघ के नियमो के अनुसार कराई गई।प्रतियोगिता के रेफरी पैनल में नितिन सोंलकी, विदित कुमार, सिम्मी, प्रशान्त राठौर, संग्राम सिंह चौधरी, नीरज पाल, हरकेश सिंह राजपूत, कुलदीप लोधी राजपूत, लोकेश तिवारी, कमल किशोर, राहुल पी टी आई सीमैक्स आदि रहे।प्रतियोगिता में प्रथम ट्रॉफी सीमेक्स स्कूल ग्रेटर नोएडा, द्वितीय ट्रॉफी आगरा, तृतीय ट्रॉफी डी.पी.एस. रिवाडी राजस्थान ने जीती।पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि संजय निर्मल (राष्ट्रीय महामन्त्री भाजपा एस.सी. मोर्चा), ओ.पी. सागर (रिटायड डी.आई.जी. उत्तर प्रदेश पुलिस), अशोक कौशिक (उप निर्धारक और कलेक्टर, मध्य क्षेत्र दिल्ली नगर निगम), अवनीश भारती (वित्त) आर.ई.सी. (भारत सरकार का उद्यम), राहुल सरत (युवा भाजपा नेता) रहे। समापन समारोह में मुख्य अतिथि अरुण सिंह (चैयरमैन- सीमैक्स इंटरनेशनल स्कूल ग्रुप), श्रीमती सीमा सिंह (चेयरपर्सन- सीमैक्स इंटरनेशनल स्कूल ग्रुप), श्रीमती अश्वनी सिंह सामुराई (वाइस चेयरमैन- वर्ल्ड बूडो कराटे संघ भारत), एस.के. सिंह (प्रिंसिपल- सीमैक्स इंटरनेशनल स्कूल, ग्रेटर नोएडा) संजय आंनद (समाज सेवी) , नीरज रावत नोएडा सीमेक्स के खिलाड़ी - प्रज्ञान मान्धाता सिंह -स्वर्ण पदक ,ग्रेटा सिंह -रजत पदक, आराध्य सिंहरजत पदक, अपूर्व सिंह - स्वर्ण पदक, शौर्य शर्मा - रजत पदक, आयुष -रजत पदक, यश चैहान स्वर्ण पदक जीते, प्रियांशु गुप्ताराजस्थान, कृतिका यादव बुलंदशहर उत्तर प्रदेश,वंश कोसीकला मथुरा, रमित बजाजआगरा उत्तर प्रदेश, रितिका छतीसगढ़ मुख्य थे।

जलवायु विहार सेक्टर-21 की चारदीवारी गिरी, 4 सफाई कर्मियों की मौत, आधा दर्जन जख्मी

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। सेक्टर-21 में नाली की सफाई का काम करने के दौरान बाउंड्री वाल मजदूरों के ऊपर आ गिरी। इस हादसे में 13 मजदूर मलबे में दब गए। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां 04 मजदूरों की मौत हो गई, जबकि एक की हालत नाजुक बनी हुई है। शेष घायलों का इलाज

जारी है। हादसे की सूचना पाकर मौके पर जिलाधिकारी के अलावा पुलिस के आला अफसर भी मौके पर पहुंच गए। जानकारी के मुताबिक मंगलवार की सुबह दर्जनों मजदूर सेक्टर-21 में बाउंड्री वाल के साथ बनी नाली की सफाई का काम कर रहे थे। नाली में एक से डेढ़ फीट तक मलवा भरा हुआ था। मजदूर इस मलबे को फावड़े से खोदकर निकाल रहे थे। इस दौरान नाली के बराबर में बनी बाउंड्री वाल अचानक भरभरा कर मजदूरों के ऊपर आ गिरी। इस हादसे में पप्पू, पुष्पेंद्र सहित करीब 10 मजदूर मलबे में दब गए।बाउंड्री वाल गिरते ही चीख-पुकार मच गई। सेक्टर के लोग भी वहां जमा हो गए। लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने राहत और बचाव कार्य करते हुए स्थानीय लोगों की मदद से मजदूरों को मलबे से बाहर निकाला। घायल मजदूरों को तुरंत सेक्टर-30 स्थित जिला अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनका उपचार चल रहा है। चिकित्सकों के मुताबिक भर्ती 10 मरीजों में से करीब 6 मरीजों को गंभीर चोटें आई हैं और उनकी हालत गंभीर बनी हुई है। जिला अस्पताल में जिन दो श्रमिकों की मौत हुई है, उनमें पुष्पेंद्र और 28 साल के पान सिंह शामिल हैं। पान सिंह बदायूं का रहने वाला था। इसके अलावा कैलाश अस्पताल में अमित और 18 साल के धर्मवीर पुत्र धर्मपाल की मौत हुई है। अमित और धर्मवीर दोनों भाई बताए जा रहे हैं। बता दें कि सेक्टर-21 शहर का सबसे पुराना सेक्टर है। करीब 30 वर्ष पूर्व सेक्टर की सुरक्षा के लिए यहां चारों तरफ बाउंड्री वाल का निर्माण किया गया था। इसका निर्माण जलवायु विहार सहकारी आवास समिति ने करवाया था। निर्माण पुराना होने के कारण बाउंड्री वाल जर्जर स्थिति में थी। पुलिस का कहना है कि बाउंड्री वाल से ही सटी हुई गहरे नाले बने हुए हैं। उसे खोलने के लिए मजदूर आज कार्य कर रहे थे।

यतेन्द्र शर्मा को कांग्रेस का उत्तर प्रदेश कमेटी का सदस्य मनोनीत किया गया

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा। लखनऊ में नवनिर्वाचित उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्यों के बैठक में नोएडा के हरौला गांव निवासी पूर्व पीसीसी सदस्य सतेन्द्र शर्मा के भाई कर्मठ संघर्षशील महेनती पूर्व महासचिव महानगर कांग्रेस कमेटी यतेन्द्र शर्मा को नवनिर्वाचित सदस्य उत्तर प्रदेश जी,उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य विदित चौधरी जी,उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव मुकेश यादव जी सहित सभी नेताओं का मैं आभार व्यक्त किया,पूर्व पीसीसी सदस्य सतेन्द्र शर्मा ने कहा की काँग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ताओ को आगे बढ़ाने का कार्य श्रीमती प्रियंका गाँधी जी कर रही है ईमानदारी से

कांग्रेस कमेटी निर्वाचित होने पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी लखनऊ कार्यालय में नवनिर्वाचित सदस्य उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेठी यतेन्द्र शर्मा ने शीर्ष नेतृत्व श्रीमती सोनिया गांधी श्री राहुल गांधी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव उत्तर प्रदेश की प्रभारी श्रीमती प्रियंका गांधी जी कांग्रेस पार्टी के लोकप्रिये नेता राज्यसभा सांसद मा0 प्रमोद तिवारी जी,कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय सचिव उत्तर प्रदेश के सह प्रभारी मा0धीरज गुर्जर जी,विधानमंडल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना दीदी जी,सह प्रभारी प्रदीप नरवाल जो पार्टी के लिए सँघर्ष कर रहे है उन्हें आगे बढ़ाया जाएगा,नवनिर्वाचित पीसीसी सदस्य यतेंद्र शर्मा को कार्य कर्ताओ द्वारा फोन पर बधाई देने का ताता लग गया,बधाई देने वालो में पूर्व पीसीसी सदस्य लियाक़त चौधरी,पूर्व महासचिव दयाशंकर पांडेय,आउटरीच के प्रदेश महासचिव विक्रम चौधरी,सचिव जीतू शर्मा,सचिव इंदरजीत तिवारी,निखिल शर्मा,गिरीश शर्मा,वीरपाल प्रजापति,सहित सैकड़ों कार्यकर्ता उत्साहित है।

पिता की वजह से खुद का नाम पसंद नहीं करते महेश भट्ट

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली ।आशिकी, सड़क, अर्थ जैसी कई सफल फिल्में देने वाले निर्देशक-निर्माता महेश भट्ट 20 सितंबर 2022 को अपना 74वां जन्मदिन मना रहे हैं। उनका जन्म गुजराती हिंदू ब्राह्मण फैमिली में हुआ है। महेश भट्ट ने अपनी स्कूलिंग मुंबई माटुंगा से पूरी की। महेश भट्ट ऐसे फिल्ममेकर हैं, जो अक्सर किसी न किसी वजह से विवादों से घिरे रहते हैं। उनकी सिर्फ फिल्में ही नहीं, बल्कि उनके स्टेटमेंट्स भी काफी बोल्ड होते हैं। उनकी निजी जिंदगी भी किसी कंट्रोवर्सी से कम नहीं रही है। महेश भट्ट का बचपन काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा है। यहां तक कि महेश भट्ट एक इंटरव्यू के दौरान खुद को 'नाजायज' औलाद' तक कह चुके हैं। फिल्ममेकर महेश भट्ट ने साल 2018 में दिए गए इंटरव्यू में अपने बचपन, माता-पिता और जिंदगी को लेकर ऐसे-ऐसे राज खोले जिसे सुनकर फैंस भी हैरान रह गए। हिन्दुस्तान टाइम्स से बातचीत में महेश भट्ट ने कहा, 'मुझे नहीं पता पिता का मतलब क्या होता है, क्योंकि मेरे कभी नहीं थे। मेरे पास मेरे पिता की कोई अच्छी यादें नहीं है, इसलिए मुझे नहीं पता कि पिता की भूमिका क्या होनी चाहिए'। मैं एक मुस्लिम मां का नाजायज बच्चा हूं, जिनका नाम शिरीन मोहम्मद अली है'। महेश भट्ट ने ये भी बताया कि पिता द्वारा दिया गया ये नाम आखिरकार उन्हें क्यों नहीं पसंद था। निर्माता महेश भट्ट ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि पिता की वजह से ही उन्हें अपना 'महेश' नाम पसंद नहीं है। उन्होंने कहा, 'मुझे अच्छे से

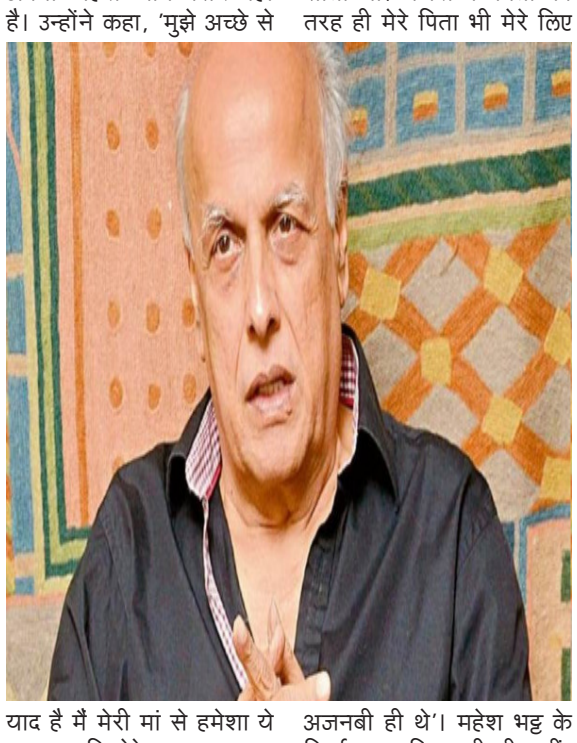

याद है मैं मेरी मां से हमेशा ये पूछता था कि मेरे नाम का मतलब क्या है। वह मुझसे बोली मैं तुम्हारे पिता से पूछूंगी उन्होंने तुम्हे ये नाम दिया है। तो जब वह मुझे मिले तो उन्होंने मेरे नाम का मतलब बताते हुए कहा महेश का मतलब होता है भगवानों का भगवान। लेकिन एक बच्चे के तौर पर ये सुनकर मुझे गुस्सा आता था, क्योंकि मेरा मानना था कौन भगवान होता है जो अपने बच्चे को ही छोड़ देता है। मुझे गणेश नाम बहुत पसंद था, जब मैं छोटा था तो मैं गणेश जी की मूर्ति अपने तकिये के पास लेकर सोता था। गणेश के पिता की तरह ही मेरे पिता भी मेरे लिए अजनबी ही थे'। महेश भट्ट के सिर्फ माता-पिता की ही नहीं, बल्कि खुद की उनकी जिंदगी भी विवादों से घिरी रही है। महेश भट्ट ने दो शादियां की हैं। पहली शादी उन्होंने 'किरण भट्ट' से की थी। जिनसे उनके दो बच्चे पूजा भट्ट और राहुल भट्ट है। लेकिन उनकी पहली शादी सफल नहीं हुई, जिसके बाद उन्होंने 1986 में दूसरी शादी सोनी राजदान से की थी।

गंभीर हेल्थ प्रॉब्लम से जूझ रही हैं 'पुष्पा' फेम सामंथा रुथ प्रभु

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली ।अंटावा' फेम एक्ट्रेस सामंथा रुथ प्रभु साउथ के साथ नॉर्थ में भी तगड़ी फैन फॉलोइंग रखती हैं। 'पुष्पा द राइज' के बाद एक्ट्रेस मल्टीपल प्रोजेक्ट्स पर काम कर रही हैं। वहीं, सामंथा के हिंदी भाषी फैंस उनके बॉलीवुड डेब्यू का बेसब्री

से इंतजार कर रहे हैं। इस बीच एक्ट्रेस की सेहत को लेकर एक बुरी खबर सामने आई है सामंथा रुथ प्रभु को लेकर मीडिया में खबरें आ रही हैं कि एक्ट्रेस ने इस वक्त अपनी फिल्मों की शूटिंग रोक दी है और पब्लिक अपीरियंस से भी बच रही हैं। इंग्लिश वेब साइट बॉलीवुड लाइफ की एक रिपोर्ट के अनुसार, सामंथा गंभीर हेल्थ प्रॉब्लम से जूझ रही है और वह इलाज के लिए यूएसए के लिए रवाना हो गई हैं। सामंथा कथित तौर पर स्किन से जुड़ी एक बीमारी 'पॉलीमॉर्फ्स लाइट इरप्शन' से जूझ रही हैं, जो सूरज की रोशनी में एक्सपोजर के कारण होता है। कहा जा रहा है कि अभिनेत्री फिलहाल ब्रेक पर हैं और डॉक्टरों की सलाह पर पब्लिक अपीरियंस से दूरी बना रखी है। रिपोर्ट के मुताबिक सामंथा रुथ प्रभु ने अपनी फिल्म 'खुशी' के अगले शेड्यूल की शूटिंग को भी पोस्टपोन कर दिया है। इस फिल्म में वह विजय देवरकोंडा के साथ काम कर रही है। सोशल मीडिया से भी है गायब सोशल मीडिया पर एक्टिव रहने वाली सामंथा काफी दिनों से कुछ भी शेयर नहीं कर रही है।

शादी और मां बनने की बात पर उर्फी जावेद ने चाहत खन्ना को दिया करारा जवाब

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । करोड़ों की ठगी करने वाले सुकेश चंद्रशेखर इस वक्त तिहाड़ जेल में बंद हैं। इस हाई प्रोफाइल मनी लॉन्ड्रिंग केस में बॉलीवुड लेकर टीवी जगत तक की कई बड़ी एक्ट्रेसेस के नाम अब तक सामने आ चुके हैं। वहीं हाई प्रोफाइल मनी लॉन्ड्रिंग के

इस केस में जैकलीन फर्नांडिस और नोरा फतेही का नाम जुड़ रहा है। यहां तक कि वे कई बार पूछताछ के लिए भी बुलाई जा चुकी हैं। इनके अलावा इस केस में टीवी एक्ट्रेस चाहत खनन, निक्की तंबोली, अरुषा पाटिल और सोफिया सिंह के नाम भी सामने आ रहे हैं। ऐसे में चाहत खनन का नाम सामने आते ही उर्फी जावेद और उनके बीच फिर से सोशल मीडिया पर तू तू मैं मैं का सिलसिला शुरू जारी हो गया है। सुकेश के साथ नाम जुड़ते ही उर्फी ने चाहत पर तंज कसा था, जिसके बाद वो दोनों में फिर से जुबानी जंग शुरू हो गई है। दोनों एक दूसरे को अपने तरीके से जवाब देने में पीछे नहीं रह रही हैं। सोमवार को चाहत ने एक पोस्ट में बीवी या मां बनने की बात लिखी। चाहत के इस पोस्ट के बाद अब उर्फी ने इंस्टा स्टोरी पर वीडियो शेयर कर लताड़ लगाई है। चाहत खनन हाल ही में ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर करते हुए लिखा, 'बिना सच्चाई जाने और सिर्फ चर्चा में आने के लिए किसी भी खबर पर कूद जाना और खुद को बेवकूफ दिखाना। बिना अक्ल वाले से क्या ही बहस करना, अक्ल होती तो काम करती या शूट करती, ना कि सेमी न्यूड स्पॉटिंग्स करती, चलो कोई ना, आप तो आंटी, बीवी या मां के लायक तो हो नहीं, अब दूसरों को ही आंटी बोल के खुश हो जाओ, अल्लाह अक्लचाहत के इस पोस्ट के बाद उर्फी चुप बैठने वालों में से थोड़ी न थीं। उन्होंने पलटवार करते हुए चाहत को खरीखोटी सुनाई। उर्फी ने पहले तो कमेंट करते हुए लिखा कि सेमी न्यूड शब्द पर गौर करिए। इसके बाद उन्होंने चाहत की कई बोल्ड तस्वीरें शेयर कीं। वहीं अब उर्फी ने अपना एक वीडियो पोस्ट किया है। इसमें वो कहती हैं, 'ये कितनी आंटी वाली बात है कि मैं बीवी और मां बनने के लायक नहीं हूं। अरे मुझसे तो पूछो, मुझे बनना ही नहीं किसी की बीवी, मुझे बनना ही नहीं है किसी की मां और ये कॉन्सेप्ट है ना कि एक औरत तभी कंप्लीट होती है जब वो किसी की बीवी और मां बनती है। मैं नहीं मानती इसे। मैं अपने आपको कंप्लीट ही मानती हूं। चाहत जी आप ही बताइए आप तो दो-दो बार बीवी बन चुकी है। आपने क्या उखाड़ लिया तो आपको तो पता ही होना चाहिए कि शादी वादी में कुछ नहीं रखा है। और जहां तक मां बनने का सवाल है तो वो तो बायलॉजी है। बायलॉजी नहीं है तो अडॉप्शन है और बहुत से ऑप्शन हैं। मैं अपना देख लूंगा, आप अपना देखिए।' शादी और बच्चों के बाद उर्फी ने चाहत के काम को लेकर भी तंज कसा। उन्होंने कहा, 'आपको आखिरी बार 1920 में देखा गया था, साइड रोल करते हुए एक सीरियल में, तो आप काम की बात तो मुझसे करिए मत। मतलब ये क्या है कि कुछ नहीं मिला तो काम। अरे मैं करूं या ना करूं मेरा घर मैं चला रही हूं या तू चला रही है। अपने काम पे ध्यान दे ना।'

फरहान अख्तर की 'डॉन 3' में होगी रणवीर सिंह की एंट्री क्या दो बड़े स्टार्स के बीच जीत पाएंगे लोगों का दिल

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । पिछले कुछ महीनों से डॉन फ्रेंचाइजी की तीसरी फिल्म डॉन 3 को लेकर चर्चाएं चल रही हैं। अब जानकारी आ रही है कि फरहान अख्तर डॉन 3 में अमिताभ

बच्चन और शाह रुख खान को कास्ट करने की योजना बना रहे हैं। समाचार पोर्टल बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट के अनुसार, फरहान अख्तर अमिताब बच्चन और शाह रुख खान को डॉन 3 में कास्ट करने पर विचार कर रहे हैं। साथ ही रिपोर्ट में दावा किया गया है कि फरहान इस फिल्म में रणवीर सिंह के कैमियों की पर भी विचार कर रहे हैं। रणवीर सिंह का करिदार डॉन के बैटन को आगे पास करेंगे, जिससे वो आगे चलकर फिल्मों में प्रतिष्ठि भूमिका निभा सकें। हालांकि अभी फरहान अख्तर या उनके प्रोडक्शन हाउस की ओर से फिल्म और फिल्म के कास्ट को लेकर कोई भी आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। वहीं, अगर रणवीर सिंह डॉन फ्रेंचाइजी की तीसरी फिल्म में कैमियो करते हैं तो देखना दिलचस्प होगा कि रणवीर दो बड़े सुपरस्टार्स के बीच खुद की परफॉर्मेंस से लोगों का दिल जीत पाने में कामयाब होते है या नहीं।

अनिल कपूर की तरह झक्कास दिखता है उनक हमशक्ल एक नजर में खा जाएंगे धोखा

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । बॉलीवुड के झक्कास एक्टर अनिल कपूर की एनर्जी के आगे बड़े-बड़े सितारों की एनर्जी फेल है। 63 साल के अनिल कपूर

अपने शानदार लुक्स के साथ-साथ अपनी फिटनेस से आज भी हर किसी को हैरान कर देते हैं। ऐसा लगता है मानों इस उम्र में आकर उनकी तरह फिट शायद ही कोई दूसरा हो। लेकिन आज हम आपको ऐसे शख्स से मिलाने जा रहे हैं जो केवल फिटनेस में ही आगे नहीं है, बल्कि बॉलीवुड के झक्कास एक्टर अनिल कपूर की हूबहू कॉपी भी है। इंटरनेट पर अनिल कपूर के हमशक्ल की तस्वीरें खूब वायरल हो रही है। जिसे देखने के बाद आप भी एक बार धोखा खा सकते हैं। अनिल कपूर का हमशक्ल कोई देसी नहीं बल्कि विदेशी लड़का है। इस शख्स का नाम जॉन एफर है, जो पेशे से एक यूएस बेस्ड फिटनेस कोच है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रही इस तस्वीर को खुद विदेशी नौजवान जॉन एफर ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया। इस तस्वीर में उन्होंने दो कोलाज लगाए। जिसमें एक तरफ 90 के दशक की अनिल कपूर की तस्वीर है, तो वहीं दूसरी तरफ सिक्स पैक एब्स के साथ मिरर लेते हुए जॉन की तस्वीर। जैसे ही जॉन ने ये तस्वीर अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर की, वैसे ही देखते ही देखते ये वायरल हो गई। इस तस्वीर के साथ कैप्शन देते हुए अनिल कपूर के हमशक्ल ने लिखा, 'मैं उस बॉलीवुड कॉल टीबीएच का इंतजार कर रहा हूं, वह कहां है अनिल कपूर के बच्चे एक अच्छे एक्टर्स है, ऐसा मेरे पिता कहते थे। सोशल मीडिया पर भी बॉलीवुड के एवरग्रीन स्टार अनिल कपूर के हमशक्ल को देखकर हैरान हो गए है। एक यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा, 'जोह्रिल कपूर'। दूसरे यूजर ने लिखा, 'आप भी कुछ समय बाद बॉलीवुड में ही होंगे'। अन्य यूजर ने लिखा, 'आप तो बिलकुल ही अनिल कपूर की तरह दिखते हैं'। हालांकि कुछ ऐसे भी फैंस है जो अनिल कपूर को भूलकर जॉन के फिटनेस के दीवाने हो गए हैं।

इस फेमस एक्ट्रेस की किडनी हो चुकी हैं खराब, इलाज के लिए नहीं हैं पैसे

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली ।साउथ सिनेमा की जानी मानी सीनियर एक्ट्रेस जयाकुमारी को लेकर एक ऐसी खबर सामने आ रही है, जो हर किसी को हैरान कर देगी। 72 साल की जयाकुमारी बीत काफी वक्स से बीमार चल रही है। चेनन्ई के एक सरकारी

अस्पताल में एक्ट्रेस लंबे समय से से अपनी किडनी से जुड़र बीमारी का इजाज करा रहा है। उनके पास इलाज के लिए पैसे नहीं हैं। ऐसे में वेटरन एक्ट्रेस ने लोगों से आर्थिक मदद की गुहार लगाई है। इसी बीच एक्ट्रेस की एक तस्वीर वायरल हो रही है। इस तस्वीर में वो अस्पताल के बेड पर बैठी हुई हैं। 72 साल की जयाकुमारी पैसों की तंगी से जूझ रही हैं। उनके पास अपना इलाज कराने भर के पैसे नहीं है। अब वो लोगों से इलाज के लिए पैसों की गुहार लगा रही हैं। एक्ट्रेस के पति का निधन कई साल पहले ही हो चुका है। उनके पति का नाम नागपट्टिनम अब्दुल्लाह था। फिलहाल वो अपने बच्चों के साथ रहती हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया के अनुसार, तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री एम सुब्रमण्यम एक्ट्रेस जयाकुमारी की मदद के लिए आगे आए हैं। एक्ट्रेस की बीमारी की खबर सुनते ही वो उनसे मिलने पहुंचे। मंत्री ने उन्होंने आश्वासन दिया सरकार उनके मेडिकल बिल का ध्यान रखेगी और उन्हें घर भी मुहैया करवाएगी। इसी रिपोर्ट्स की मानें तो जयाकुमारी के तीनों बच्चों में से किसी ने उनका हालचाल अस्पताल आकर नहीं लिया है। जयाकुमारी ने 1960 से 1970 के दशक में तमिल और मलयालम फिल्मों में काम किया है। उन्होंने साल 1966 में महज 16 साल की उम्र में अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत की थी। उनकी पहली तमिल फिल्म नाडोदी थी। इसके साथ ही उनकी पहली मलयालम फिल्म कलेक्टर मालती थी। अपने करियर में उन्होंने कई सुपरस्टार्स संग स्क्रीन शेयर किया है। वहीं उन्होंने 300 से ज्यादा फिल्मों में काम किया था। उन्होंने एनगिरिन्डो वंडल, हरमना, नुतरुक्कू नुरू, अनाथै आनंदन जैसे अलग-अलग किरदारों को पर्दे निभाने के लिए जाना जाता है।

पहलगाम में एक्टर इमरान हाशमी पर हुई पत्थरबाजी, मामला हुआ दर्ज

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली ।एक्टर इमरान हाशमी हाल ही में अपनी अपकमिंग फिल्म ग्राउंड जीरो की शूटिंग के लिए जम्मू कश्मीर पहुंचे थे। वहीं अब एक्टर

को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही है। कहा जा रहा है कि जम्मू कश्मीर के पहलगाम की मेन मार्किट में एक्टर पर पत्थरबाजी हुई है। आज तक की एक रिपोर्ट के मुताबिक, इमरान हाशमी पर कुछ अनजान लोगों ने पत्थरबाजी का फिल्म ग्राउंड जीरो की शूटिंग खत्म कर एक्टर घूमने के लिए निकले थे, जिसके बाद इमरान हाशमी और बाकी लोगों पर कुछ लोगों ने पत्थरबाजी करना शुरू किया। इस मामले की ईंपहलगाम पुलिस थाने में दर्ज कर ली गई है। पत्थरबाजी करने वाले लोगों पर धारा 147, 148, 370, 336, 323 लगाई गई है। फिल्म ग्राउंड जीरो की बात करें तो ये बॉर्डर सिक्योरिटी फॉर्स यानी ँएइ के जवान पर आधारित है। इस फिल्म में इमरान हाशमी एक आर्मी ऑफिसर के कैरेक्टर में नजर आने वाले हैं। पहलगाम से पहले इमरान हाशमी श्रीनगर में शूटिंग कर रहे थे। श्रीनगर के एस पी कॉलेज में इमरान ने शूटिंग की थी। मूवी में हाशमी के साथ सई तमहांकर और जोया हुसैन नजर आएंगी। फिल्म में सई और इमरान हाशमी को रोमांस करते हुए देखा जाएगा। खबर है कि सई फिल्म में इमरान की पत्नी की भूमिका निभा में दिखाई देंगी। इस फिल्म का निर्देशन तेजस देऊस्कर कर रहे हैं। एक्टर के वर्कफ्रंट की बात करें तो जल्द अक्षय कुमार के साथ फिल्म सेल्फी में नजर आएंगे। सलमान खान की फिल्म टाइगर 3 में भी इमरान हाशमी अहम किरदार निभा रहे हैं। फिल्म का निर्देशन मनीषा शर्मा कर रहे हैं और ये अगले साल ईद के खास मौके पर सिनेमाघरों में दस्तक देगी।

केट विंसलेट की सेहत में हुआ सुधार, जल्द करेंगी फिल्म की शूटिंग

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । टाइटैनिक फेम एक्ट्रेस केट विंसलेट हाल ही में एक हादसे का शिकार हुई थी। दरअसल, फिल्म की शूटिंग के

दौरान एक्ट्रेस को चोट लगी थी जिसके चलते उन्हें अस्पाल में भर्ती थीं, लेकिन अब खबर है कि केट की सेहत पहले से काफी सुधर रही है औरवह जल्द काम पर लौटने के लिए तैयारी भी कर रही है। क्रोएशिया में शूटिंग के दौरान केट विंसलेट का पैर फिसल गया था, जिसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। वहीं खबर है कि एक्ट्रेस ठीक है और जल्द से जल्द फिल्म की शूटिंग के सेट पर जाना चाहती हैं। बता दें केट विंसलेट ऐतिहासिक ड्रामा 'ली' के लिए शूटिंग कर रही थी । यह फिल्म वोग कवर मॉडल से फोटोग्राफर बने ली मिलर की बायोपिक है । जो प्रतिष्ठित पत्रिका के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के इतिहास में एक प्रमुख व्यक्ति थे। इन दिनों इस फिल्म की शूटिंग क्रोएशिया में चल रही है । खबरों के मुताबिक अभिनेत्री इस सप्ताह के अंत में शूटिंग फिर से शुरू करेंगी। डायरेक्टर एलेन कुरास की फिल्म में मैरियन कोटिलार्ड, जूड लॉ, एंड्रिया राइजबोरो और जोश ओ' कॉनर शामिल हैं।

नये अवतार में लौट रही जेम्स कैमरन की फिल्म

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली । हॉलीवुड फिल्म अवतार ना सिर्फ दुनिया की सबसे अधिक

बिजनेस करने वाली फिल्मों में शामिल है, बल्कि तकनीक और ट्रीटमेंट के लिहाज से भी ये आइकॉनिक फिल्मों में शामिल है। 2009 में इतिहास रचने वाली यह फिल्म बड़े पर्दे पर लौट रही है, मगर बिल्कुल नये अवतार में। फिल्म के निर्देशक जेम्स कैमरन ने एक वीडियो जारी करके बताया कि फिल्म में इस बार क्या-क्या बदलाव तकनीकी रूप से किये गये हैं। वैसे, इसी साल दिसम्बर में अवतार का दूसरा भाग अवतार- द वे ऑफ वॉटर भी रिलीज होने वाला है। अवतार को दोबारा रिलीज करने की घोषणा अगस्त में की गयी थी। फिल्म का नया ट्रेलर रिलीज करने के साथ बताया गया था कि अवतार 23 सितम्बर को सीमित समयावधि के लिए सिनेमाघरों में उतारी जा रही है। अवतार को दोबारा रिलीज करने का सबसे कारण, दिसम्बर में दूसरे भाग का आना है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।